समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जनवरी २००६ ▲ वर्ष ५६ ▲ अंक १ ▲ एक प्रति १० रुपए ▲ वार्षिक १०० रुपए

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ७१वां स्थापना दिवस

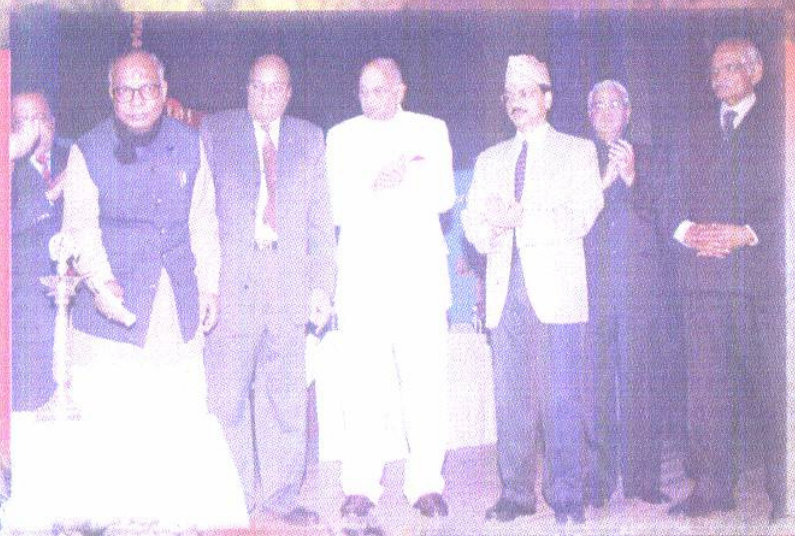

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७१वें स्थापना दिवस समारोह का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्यमंत्री श्री प्रबोधचन्द्र सिन्हा। साथ में हैं सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, हरिशंकर सिंहानिया, डा. गोविन्द प्रसाद 'कुसुम', सीताराम शर्मा एवं हरिप्रसाद कानोड़िया।

संसदीय कार्यमंत्री प. बंग सरकार श्री प्रबोधचन्द्र सिन्हा श्री हरिशंकर सिंहानिया को मानपत्र प्रदान करते हुए

Equipped with Modern Container Handling Equipments

Head Office :

8, Camac Street, Kolkata - 700 017
Phone : 2282-5784/5849, Fax : 033-2282-8760
E-mail : roadwingsinternational@gmail.com

Zonal Office :

"Nirma Plaza", Moral, Makwana Road
Andheri (E), Mumbai 400 059
Phone : 2850 7928, Fax : 022-2850 7899
E-mail : roadwings@vsnl.com

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
सम्मेलन के सदस्यों के सूचनार्थ	४
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	५
स्थापना दिवस / *श्री मांगीलाल चौधरी*	६
(अ) राजनीतिक माहौल में रचनात्मक समाज बनाना है / *श्री भानीराम सुरेका*	७
सामाजिक कार्यकर्ता अब एक 'बदनाम' नाम- 'सीरम'	८
अनमोल वचन	८
राजस्थान का वैश्य व्यापारी वर्ग भले ही वे कहने को राजस्थानी हैं, उनका दिल हिन्दुस्तानी है / *श्री बालकृष्ण गोयनका*	९-१०
सामूहिक साधना / *आचार्य विनोबा भावे*	१०
सामाजिक चिंतन / *श्री ओम लडिया*	११-१४
आत्म ज्ञान / *आंगीरस*	१४
रिश्ता सास-बहू का / *श्रीमती शारदा अग्रवाल*	१५
परित्यक्ता नारी और समाज / *श्रीमती सुधा गोयल*	१५
झारखंड में मारवाड़ी झारखंडियों की भूमिका / *डॉ. मनोहर लाल गोयल*	१६-१७
दो पल का साथ / *श्रीमती कोमल अग्रवाल*	१७
राजस्थानी गजल / *श्री लक्ष्मणदान कविया*	१७
विदा की बेला / *डॉ. लखबीर सिंह 'निर्दोष'*	१७

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ७१वां स्थापना दिवस समारोह सहित पश्चिम बंग, पूर्वोत्तर, बिहार, उत्कल, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ प्रांतीय सम्मेलनों की रिपोर्टों के साथ अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की भी महत्वपूर्ण रिपोर्टें।	१९-२६

समाज विकास

जनवरी, २००६

वर्ष ५६ ● अंक १

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए २ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

समाज विकास का दिसम्बर २००५ अंक अभी-अभी मिला। आदरणीय तुलस्यानजी का लेख ''जमाने को आगे बढ़ाना है'' पढ़ा। आपके लेख काफी प्रभावशाली होते हैं और काफी हद तक मुझे इनमें अपने विचारों का प्रतिबिम्ब नजर आता है। लेखों में आपके द्वारा प्रयुक्त कविताएं एवं शेर बड़े माकूल होते हैं, जिन्हें मैं अक्सर लिख लेता हूं। मारवाड़ी समाज आपके सशक्त नेतृत्व का लाभ उठा पाये, मेरी नववर्ष पर यही कामना है।

सम्मेलन सत्तर वर्षों का सफर तय कर चुका है। इसके समक्ष नई चुनौतियां हैं। इन्हें सफलतापूर्वक निपट पाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

- बसंत कुमार हेतमसरिया
रामगढ़ कैंट

दिसम्बर अंक प्राप्त हुआ। माननीय अध्यक्ष श्री माहनलालजी तुलस्यान को १९ नवम्बर को प्रतिष्ठित दादाभाई नौराजी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह अपने सम्पूर्ण समाज के लिए बड़े ही गौरव की बात है। भविष्य में भी ऐसे प्रतिष्ठित सम्मान सदैव प्राप्त होते रहें, यही मनोकामना है।

''जमाने को आगे बढ़ाना है'' जिसमें हमारे अध्यक्ष महोदय ने बड़े ही दार्शनिक ढंग से इसे संवारा है। समाज समय रहते चेते - सारी सामाजिक विकृतियां अपने-आप खत्म हो जाएगी।

- सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

सीतारामजी द्वारा सम्पादित 'समाज विकास' मैं पढ़ती आ रही हूं। अन्य किसी पत्रिका ने विचारों को नई दिशा नहीं दी। समाज विकास हमारे आस पास फैली कुरीतियों, बुराइयों व कमियों को दूर करने के उपाय उजागर करता है व समाज के नये शिखर की पहचान कराई व मनोबल बढ़ाया। मोहनलालजी तुलस्यान की रचनाओं ने भी प्रभावित किया। पीड़ित नारी व पुरुष की समस्या का समाधान कुछ मायनों में सामने आया-

रोशनी का गर यकीं होगा,
डर अन्धेरे का फिर नहीं होगा।

- कमल अग्रवाल
जूनागढ़

सम्मेलन के सदस्यों के सूचनार्थ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७१वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में सम्मेलन द्वारा प्रकाशित इसके सदस्यों की एक डायरेक्टरी का विमोचन पश्चिम बंगाल के संसदीय एवं आबकारी मंत्री प्रो. प्रबोधचन्द्र सिन्हा के कर कमलों से किया गया।

यह प्रथम अवसर है कि जब सम्मेलन ने इतने विस्तृत रूप से डायरेक्टरी का प्रकाशन किया है। सभी सदस्यों ने इसकी प्रशंसा की है।

डायरेक्टरी की साज-सज्जा, संपादन एवं नि:शुल्क प्रकाशन में श्री प्रदीप ढेडिया की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है, जिन्होंने अपने सभी कार्यों को तिलांजलि देकर अपने डेढ़ वर्ष के अथक प्रयास में देर रात तक बैठकर इसके एक-एक अक्षर को पढ़ा, इसमें सुधार किया, इसे सजाया, संवारा एवम् आकर्षक, ऐतिहासिक व संग्रहणीय बनाया। इसके प्रकाशन में श्री सूर्यकरण सारस्वा के अथक श्रम एवम् संपादन सहयोग को भी भला कैसे भूलाया जा सकता है। यदि इनका सहयोग नहीं मिला होता तो इसे तैयार कर पाना असम्भव सा था। श्री प्रदीप ढेडिया एवम् श्री सूर्यकरण सारस्वा को सहस्र साधुवाद।

सम्मेलन के आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है कि वे एक निवेदन पत्र देकर सम्मेलन कार्यालय से नि:शुल्क डायरेक्टरी प्राप्त कर सकते हैं। साधारण विशिष्ट सदस्य अपना पूर्ण सदस्यता शुल्क एवं निवेदन पत्र देकर नि:शुल्क इसकी एक प्रति प्राप्त कर सकते हैं। एक से अधिक प्रति के लिए उन्हें ५०/- रु. प्रति डायरेक्टरी की दर से भुगतान करना होगा। समाज का कोई भी व्यक्ति, जो कि सम्मेलन के सदस्य नहीं हैं, उक्त राशि देकर इन्हें प्राप्त कर सकते हैं। अन्तर्राज्यीय सदस्यों को उनके निवेदन पत्र के आधार पर मात्र डाक खर्च लेकर वी.पी.पी. द्वारा डायरेक्टरी भेजी जा सकती है।

अध्यक्ष
मोहनलाल तुलस्यान

महामंत्री
भानीराम सुरेका

समय का मूल्य पहचानें

✍ मोहनलाल तुलस्यान

इस शाश्वत सत्य को सभी जानते हैं कि जीवन में अगर सबसे मूल्यवान कुछ भी है तो वह समय ही है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि 'टाइम एंड टाइड इज नेवर वेट' समय किसी का भी इंतजार नहीं करता। समय के इसी मूल्य को पहचानते हुए संत कबीरदास ने कहा है-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करोगो कब।।

हम खोया हुई स्वास्थ्य उचित उपचार से पुनः प्राप्त कर सकते हैं। खोया हुआ धन- वैभव कड़ी परिश्रम करके पुनः प्राप्त कर सकते हैं, मगर खोया हुआ समय कभी भी किसी भी तरह पुनः प्राप्त नहीं कर सकते। आज अगर हम जीवन में कहीं चूक रहे हैं तो समय के मूल्य को पहचानने में ही चूक रहे हैं। खुलकर इसका अपव्यय कर रहे हैं। जो लोग समय के सही मूल्य को पहचान लेते हैं वे जीवन में सफल हो जाते हैं। आज की युवा पीढ़ी में इसका ह्रास बहुतायत मात्रा में देखा जा रहा है। समय की पाबंदी और समय की योजना जैसी बातों को यह पीढ़ी महत्वहीन समझती है। फलतः भटकाव में जीती है। समय की बात चली है तो मैं महाभारत के एक प्रकरण को अवश्य ही उधृत करना चाहूंगा -

एक बार एक याचक महाराज युधिष्ठिर के द्वार पर याचना कर रहा था। युधिष्ठिर उस समय व्यस्त थे। भीम पहरा दे रहे थे। याचना सुनकर व्यस्तता के कारण युधिष्ठिर ने याचक से कहा- 'कल आना'। यह सुनते ही भीम ने दुन्दुभी बजा-बजाकर घोष करना शुरू कर दिया कि महाराज युधिष्ठिर ने काल को जीत लिया। भीम को दुन्दुभी बजाते और घोष करते देख युधिष्ठिर ने पूछा- तुम दुन्दुभी बजा बजाकर यह घोष क्यूं कर रहे हो? भीम ने उत्तर दिया - महाराज। आपने याचक को कल आने के लिए कहा है। इसका अर्थ यही हुआ कि कल तक तो काल आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

यह सुनकर युधिष्ठिर को अपनी भूल का अहसास हुआ, उन्होंने भीम से कहा- उस याचक को बुलालो।

महाभारत का यह दृष्टांत हमें यह बताता है कि आज का काम कल पर मत टालो। समय पर कार्य करना चाहिए।उसका सदुपयोग करना चाहिए।

कोई भी काम समय पर न करने तथा समय की सही योजना न बनाने की परिपाटी का ही परिणाम है कि आज की युवा पीढ़ी सिद्धि प्राप्त नहीं कर पा रही है। समय के संदर्भ में मुझे अंग्रेजों की विचारधारा बहुत प्रभावित करती है। वे समय को बहुत महत्व देते हैं। सभी काम समय की पाबंदी के साथ करते हैं। हम देरी को 'इंडियन टाइम' कहकर समय का उपहास करते हैं। ट्राफिक जाम, जरूरी काम, कोई मिल गया देरी के अमूमन यही बहाने बनाते हैं। परन्तु एक अंग्रेज या यूरिपियन ऐसा कभी नहीं करते, जो समय निश्चित हुआ है। उसी समय कार्य को करते हैं।

लगभग सारे संसार पर ब्रिटिश शासन था। यह भी कहा जाता है कि ब्रिटिश राज में सूर्यास्त नहीं होता था। इसके पीछे केवल और केवल एक ही बात थी कि उन्होंने समय के महत्व को पहचान कर सही समय पर सही निर्णय लेकर के कार्य किए।

आज मारवाड़ी समाज में अनेकानेक समस्याएं हैं, अनेकानेक विसंगतियां हैं। यह भी सच है कि मारवाड़ी समाज में शिक्षा का स्तर उठा है परन्तु समय की पाबंदी के स्तर पर हमारा समाज नीचे की ओर झुक रहा है। अब हमारा मारवाड़ी समाज व्यावसायिक एवं शैक्षणिक स्तर की तरह समय की पाबंदी के स्तर को भी ऊपर उठाने के संदर्भ में विचार करते हुए एक क्षण को भी अनावश्यक नष्ट किये बिना अपने सामाजिक दायित्व का पालन करे। समाज को सुदृढ़ बनाकर आगे बढ़ाए। देश की उन्नति में सहायक बने। आज समय का यही तकाजा है कि हम समय के मूल्य को पहचानें, उसका सद्प्रयोग जातीय तथा राष्ट्रीय उत्थान में करें।

स्थापना दिवस पालन समारोह

मांगीलाल चौधरी, अध्यक्ष, राहा शाखा (असम)

आज ७० वर्ष का संघर्षमय एवं चुनौतिपूर्ण सफर तय करते हुए हमने ७१वें वर्ष की दहलीज़ पर पदार्पण किया है, प्रति वर्ष की भांति परम्परागत रुपेण हम ये गौरवपूर्ण दिवस मनाते रहे हैं। स्थापन दिवस के दिन हम वर्ष भर का लेखा जोखा आकलन करते हुए भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की रणनीति तैयार करते हैं।

आज के ७० वर्ष का यही दिन सम्मेलन का प्रादुर्भाव दिवस था। अपने समाज के चतुर्मुखी विकास एवं कुरीतियों के उन्मूलन के लिए तत्कालिन द्रष्टाओं ने इस मंच की आवश्यकता अनुभव करते हुए इसे मूर्त्तरूप दिया और विभिन्न क्षेत्रों में समाज बन्धुओं को सुषुप्त अवस्था से जागृत करते हुए एवं गालियों व लाठियों के प्रहार सहते हुए सती प्राथ, बालविवाह, पर्दा प्रथा आदि का विरोध करके नारी शिक्षा, पुनर्विवाह, परित्यक्ता विवाह, आदि का समर्थन करते हुए सफलता उपलब्ध की है। तथा कुछ हद तक दहेज प्रथा में भी सफलता हासिल की है।

आज से ५० वर्ष पहले जो सोच थी, कुरीतियां थीं उनमें समय की आवश्यकता-अनुरूप बदलाव आया है। आना भी स्वाभाविक है। लेकिन हर चीज मर्यादा में ही सुशोभित होती है। आज के इस टीवी युग ने फैशन को कहां लाकर खड़ा कर दिया है इससे आप सभी अभिभूत हैं। जिस पर्दाप्रथा को ५० वर्ष पूर्व हम हटाने के पक्षधर थे आज वही इतने विकृत रूप में प्रस्तुत है कि पर्दाप्रथा उन्मूलकों के समक्ष पर्दा करने की नौबत आ पड़ी है। अत: मेरा आपसे निवेदन है कि घर-परिवार, बहन-बहुओं से इस पर विचार-विमर्श करते हुए अनुशासित रहने की आवश्यकता है।

दूसरी बात पर आता हूं- दिखावा (फैशन)। आडम्बर इतना बढ़ गया है कि थीम का चलन हो गया है। वस्तु के मूल्य उसकी पैकिंग, सजावट पर थीम को आधारित करके ज्यादा खर्च होने लग गया है। इसके लिए आपसे अनुरोध करता हूं कि आप कोई शादी विवाह, एवं अन्यान्य फंक्शनों में अपने सगे-सम्बन्धी से कोई भी सामान लेते समय ये डेकोरेट पैकिंग न लेने की चेष्टा करें।

तीसरी बात में आता हूं दहेज पर। दहेज आज जिस रूप में फल-फूल रहा है उससे आप सभी अवगत हैं। आज से चालीस वर्ष पूर्व हमारे पूर्वोत्तर के सभापति तत्कालीन मोहनलालजी जालान एवं स्व. बनवारीलालजी हंसारिया (सर्वोच्च न्यायालय के निर्वीत न्यायाधीश) के सानिध्य में नौगांव के राजस्थानी युवक मण्डल के मंच से आन्दोलन चला था और वह शत-प्रतिशत सफल भी रहा। लेकिन आज नगदी के लेन देन के स्थान पर वस्तुओं के लेनदेन पर ज्यादा झुकाव हो गया है।

इस पर मेरा अपना सोच है कि एक अमीर परिवार अपने बेटे के लिए अमीर परिवार की ही लड़की लाना चाहेगा। इसी प्रकार एक अमीर बाप अपनी लड़की को अमीर परिवार में ही देना चाहेगा अर्थात अमीर परिवार का लड़का कोई गरीब परिवार की लड़की नहीं लाना चाहेगा। अत: दहेज प्रथा परिणामस्वरूप कम नहीं हो पा रही है।

इस पर मेरा सुझाव है कि अमीर लड़के-लड़की वालों से शादी विवाह के समय एक एक मुश्त राशी (लगभग १०%) महिला कल्याण के लिए दानस्वरूप लेने का आग्रह किया जाए। इससे उस राशि से एक गरीब परिवार की लड़की के हाथ पीले करने में सम्मेलन को सुविधा होगी, समाज का भी हित साधित होगा।

दहेज प्रथा को नियोजित करने के लिए सम्मेलन के मंच के कार्यकर्त्ताओं ने समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह के आयोजन की शुरूआत की है जिसके फलस्वरूप फिजूल खर्चा पर लगाम के साथ साथ समय की भी बचत होती है तथा समाज का एक बड़ा वर्ग का हिस्सा लाभान्वित हो रहा है। इस प्रकार के आयोजनों में परिलक्षित होता है कि समाज के अमीर वर्ग की उपस्थिति शून्य प्राय: रहती है तथा इन परिचय सम्मेलनों में युवकों की उपस्थिति व पंजीयन तो काफी संख्या में होता है लेकिन युवतियों का कभी कभी पंजीयन नहीं के बराबर रहता है। हाल ही में अक्षय में दो परिचय सम्मेलनों को रद्द करना पड़ा।

यदि इस प्रकार के सम्मेलनों का सफलीकरण हो सके तो दहेज पर काफी हद तक अंकुश लग सकेगा ऐसा मेरा मत है। अत: समाज बन्धुओं से मेरी अपील है कि आप भी इस सम्बन्ध में अपने सुझाव व विचार हमारे मुख पत्र (समाज विकास) के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा संख्या में प्रस्तुत करें।

एकता में इतना बल है कि एकजुटता के कारण ही अपना देश विदेशियों को खदेड़ कर स्वाधीन हो पाया था और स्वराज्य स्थापित हुआ, इतिहास इसका साक्षी है। इसी तरह हमें भी एकजुट होना है और इसके लिए मारवाड़ियों के लिए मारवाड़ी सम्मेलन ही उपयुक्त मंच है। मेरा आपसे साग्रह निवेदन है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में सम्मेलन से जुड़कर इसको सशक्त बनायें।●

"किसी धर्म को इसलिए अंगीकार मत करो कि वह सबसे प्राचीन है। इसका सबसे प्राचीन होना इसके सच्चे होने का कोई प्रमाण नहीं है। कभी पुराने से पुराने घरों का गिराना उचित होता है और पुराने वस्त्र अवश्य बदलने पड़ते हैं। यदि आप कोई रोशनी को ग्रहण करने के राजी नहीं हैं तो जाओ पितृ-लोक में पूर्व पुरुषों के साथ निवास करो। यहां ठहरने का कौन सा काम है?

अपनी स्वतंत्र बुद्धि को बुद्ध, ईसा, मुहम्मद और कृष्ण के हाथ न बेच डालो।"

– स्वामी रामतीर्थ

(अ) राजनीतिक माहौल में रचनात्मक समाज बनाना है

✍ भानीराम सुरेका, महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज विकास के सभी पाठकों, शुभेच्छुकों, सम्मेलन सदस्यों व देश-विदेश के कोने-कोने में बसे प्रवासी मारवाड़ियों को नववर्ष की शुभकामना।

समाज विकास का यह अंक जब तक आपके हाथों में पहुंचेगा गणतांत्रिक भारत ५७वां गणतंत्र दिवस पालित कर चुका होगा। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी देश के कोने-कोने में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा एवं प्रतिष्ठित व तथाकथित नेता गणतंत्र की रक्षा के नाम पर बड़े-बड़े वादे करेंगे। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच गणतंत्र दिवस को उत्सव के रूप में मनाने की एक परंपरा का निर्वहन होगा और पुन: अगले साल की प्रतीक्षा शुरू हो जाएगी।

अपने देश में परंपराओं का बड़ा महत्व है चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो या कि राष्ट्रीय। बस एक बार शुरू होने की देर रहती है फिर अपने आप परंपरा का विकास होता जाता है।

२६ जनवरी १९५० को जब भारत को गणतांत्रिक देश का रूप देकर संविधान लागू किया गया तो बहुत सी बातें कही गई जिस पर अमल करने से भारत वाकई एक महान गणतांत्रिक देश हो सकता था। चुनाव के जरिये जनप्रतिनिधियों के निर्वाचन की व्यवस्था, आम आदमी को वास्तविक अधिकार देने की बात, विकास परियोजनाओं को तेजी से लागू करने की बात, सबको शिक्षा के आलोक से आलोकित करने की बात आदि ऐसी बातें थीं जो वाकई महत्वपूर्ण थीं और एक सद्य: स्वतंत्र हुए देश को विकास पथ पर आगे बढ़ाने की दृष्टि से अभीचीन भी। पर इन्हें वास्तविक रूप प्रदान करने की बजाय इनका राग अलापना परंपरा में तब्दील हो गया।

१९५० से २००६ तक के गणतंत्र दिवस में ऐसे बहुत कम अवसर हुएहैं जब सफलता का गुणगान किया गया हो। अमूमन, हर बार पिछली बातें ही दुहराई जाती रही हैं। हां, लोग बदलते रहे हैं।

भारतीय गणतंत्र की बेहतरी के लिए जिन उपायों पर जोर देने की बात की गई थी वे अब निरर्थक सी लगने लगी हैं। चुनाव एक प्रहसन बन गया है क्योंकि राजनीतिक पार्टियों में अच्छे, असरदार, विद्वान लोगों की कमी हो गई है एवं ऐसे तत्व राजनीति की मुख्यधारा में प्रभावशाली हो उठे हैं जो समाज और राष्ट्र के लिए हानिकारक हैं। सम्प्रति संसद में सवाल उठाने के लिए घूस लेने का मामला हो या विगत वर्षों में घोटाले, अपराधियों का संरक्षण देकर प्रभाव स्थापित करने का प्रयास, ये प्रमाणित करते हैं कि गणतंत्र के प्रहरी अपने ईमान से डिग चुके हैं। वे इस देश के विकास में सहायक नहीं बाधक हैं।

एक ऐसी स्थिति में हमारा दायित्व बहुत बढ़ गया है जो समाज के उत्थान के क्षेत्र में वर्षों से कार्यरत हैं। इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने समाज को इस तरह तैयार करें कि वह प्रतियोगी हो, आधुनिक हो एवं संगठित हो जैसा कि हमने आजादी के बाद किया था और राष्ट्रीय क्षितिज पर एक संगठित औद्योगिक समाज के रूप में चिन्हित हुए थे।

हम औ तुम पर, जग पर, जीवन हर मानव पर
जग का, जग की मिट्टी तक का भारी ऋण है
है लेना हमको उचित तभी तब जग-मग से
जब तक बदले में देने को कुछ कंचन है।

हम जिस देश, समाज और परिवार में जन्मे हैं, पले-बढ़े हैं उसके प्रति हमारा बहुत बड़ा दायित्व है और जब तक हम अपने दायित्वों के प्रति सजग नहीं होंगे तब तक देश, समाज और परिवार के ऋण से हम उतीर्ण नहीं हो सकते। बचपन में पढ़ी नीरज की ये पंक्तियां मुझे अब भी प्रेरित करती हैं-

मैं वही पढ़ा जो मुझे पढ़ाया जीवन ने,
हूं सीख सका वह गया सिखा जो समय-काल,
मैंने बस मानवता को पूजा जीवन में
बस सदा आदमी के आगे यह झुका भाल।

इस बार के गणतंत्र दिवस पर यह संकल्प लें कि आने वाले दिनों में गणतंत्र की रक्षा के लिए, भारत के विकास के लिए एवं सर्वोपरि मारवाड़ी समाज के उत्थान के लिए हम एकजुट होकर काम करेंगे।

और अंत में,

गत २४ दिसम्बर २००५ को हमने सम्मेलन का ७१वां स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया एवं इस अवसर पर सम्मेलन के इतिहास में पहली बार एक अत्याधुनिक, सुसज्जित सदस्य-विवरणिका का विमोचन देश के शीर्षस्थ उद्योगपति व सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री हरिशंकर सिंहानिया ने किया। इस विवरणिका की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। आनेवाले दिनों में और रचनात्मक कार्यों को अंजाम देने के लिए हम कृतसंकल्प हैं बशर्ते आपका सक्रिय सहयोग हमें मिलता रहे।●

वह विचार कैसा जिसमें मानुषिक दैवत्व न हो, वह योग कैसा जिसमें परहित चिंतन का पुट न हो, वह धर्म कैसा जिसमें पर-द्रोह का शमन न हो, वह शास्त्र कैसा जिसमें पवित्रता का आभास न हो। जिस प्रकार ज्योति तिमिर को दूर कर सकती है, उसी प्रकार मानुषिक दैवत्व के विचार ही मानव-सम्प्रदाय को कष्टों से मुक्ति दिला सकते हैं और मानव-समाज का यथार्थ कल्याण तो मंगल विचार और परहित-चिंतन में ही है।

- लियो टाल्सटाय

सामाजिक कार्यकर्त्ता अब एक 'बदनाम' नाम : 'सीरस'

एक समय था जब सामाजिक कार्यकर्त्ता को उसकी नि:स्वार्थ सेवा एवं ईमानदारी के लिए समाज बड़े सम्मान की दृष्टि से देखता था। त्याग, सेवा भावना तथा समर्पण के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आदर का पात्र होता था। बड़े औद्योगिक घराने ऐसे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की समाज सेवा का आदर करते हुए ससम्मान उनकी आर्थिक जरूरतों का भार सहर्ष स्वीकार करते रहे थे। यह एक ईमानदारी का रिश्ता होता था। आर्थिक सहयोग के एवज में कहीं कोई अपेक्षा नहीं होती थी, न ही सामाजिक कार्यकर्त्ता इसके बदले अपने सैद्धांतिक विचारों से कोई समझौता करता था। बड़ा पवित्र सम्बन्ध होता था। इसका सबसे बड़ा उदाहरण अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के एक भूतपूर्व अध्यक्ष के रूप में देखने को मिलता है। इन श्रद्धेय सामाजिक कार्यकर्त्ता अध्यक्ष ने अपने इस सम्मेलन के सिद्धांतों के लिए उस परिवार के विरुद्ध आंदोलन करने में भी कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई जहां से उनकी जीविका का सम्बन्ध था। बड़ी बात यह है कि इससे उनके आपसी सम्बन्धों में कोई फर्क नहीं पड़ा, वे पूर्ववत ही रहे। ऐसे होते थे सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं उनके पोषक, दोनों वन्दनीय थे।

अब सामाजिक कार्यकर्त्ता एक 'बदनाम' नाम हो गया है। अपवाद सब जगह होते हैं, यहां भी है, उनको क्षमा याचना के साथ कोटि-कोटि प्रणाम है।

समाज सेवा अब एक 'मिशन' नहीं पत्रकारिता एवं राजनीति की तरह एक 'प्रोफेशन' हो गया है। तीनों प्रोफेसनों का आजकल चोली-दामन का साथ है। इनका आपस में बड़ा अजीबो गरीब रिश्ता है। कुछ तो 'थ्री-इन-वन' है। समाज सेवा भी करते हैं पत्रकार भी हैं और राजनेता बनने के लिए राजनीति में भी उठापटक कर रहे हैं। ये सच्चे मायनें में प्रोफेशनल हैं। समाज सेवा इनके लिए स्व-सेवा और राजनीति एक धंधा है। ये पत्रकार कम 'पेशेकार' ज्यादा है।

ये 'थ्री-इन-वन' या 'टू-इन-वन' टाईप का पेय सिर्फ समाज सेवा से नहीं भरता। इसलिए वे आप चाहे या न चाहे पत्रकारिता या राजनीति के माध्यम से आपकी सेवा करते हैं। ये सामाजिक संस्थाओं में 'राजनीति' करते हैं और राजनीति में राजनेताओं की 'सेवा'। ये आम आदमी नहीं होते। इनमें कुछ अद्‌भुत क्षमताएं होती हैं। कूतर्क की सीमा तक ये तार्किक होते हैं। अच्छा खासा भाषण झाड़ सकतेहैं। वाक् पटु ऐसे कि झूठ को सच साबित कर दें। ये शिक्षा में विश्वास नहीं करते इसलिए प्राय: अल्प या अशिक्षित 'बुद्धिजीवि' होते हैं, लेकिन शिक्षा या 'सीख' देने में इनका कोई मुकाबाला नहीं। ज्ञान तो ऐसे बांटते हैं कि पीएचडी तक शर्मा जावें।

समाज में आज भी नि:स्वार्थ समाज सेवी है। लेकिन जैसे एक मछली पूरे तालाब को गंदा करती है इन प्रोफेशनल समाज सेवियों ने 'समाज सेवा' पर कब्जा कर लिया है। ये आपस में बड़ी शीघ्रता एवं चतुराई से संगठित हो जाते हैं। इन्हें सबसे ज्यादा डर नि:स्वार्थ समाजसेवियों से लगता है, उन्हें बाहर निकालने के बाद तो इनकी पौ-बारह है। ये आजकल सफल हो रहे हैं। क्योंकि जैसे एक गुण्डा पूरे इलाके में हजारों संभ्रांतों को घर के भीतर रख सकता है। ये भी जानते हैं कि भले आदमी को रास्ते के रोड़े से हटाने का सबसे सरल उपाय है कि उसकी 'टोपी' उछाल दो, वह स्वयं इस 'गंदगी' से दूर हट जाएगा। इस नस्ल की अपनी कुछ पहचान होती है। अशिक्षित या अर्द्ध शीक्षित होने के साथ-साथ ये प्राय: अपने जीवन में असफल होते हैं, ईर्ष्या एवं नकारात्मक सोच से ग्रसित ये अन्य किसी की सफलता का जश्न नहीं मना सकते।

इनके 'प्रमोशन' के लिए एक सीमा तक समाज भी जिम्मेवार है। समाज इन्हें स्वीकार तो कभी नहीं करता इसीलिए उन्हें सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। समाज उन्हें केवल बर्दाश्त करता है। लेकिन आज आवश्यकता है कि इस तरह के लोगों का खुलकर विरोध किया जाये, नहीं तो राजनीति की तरह सामाजिक जीवन में भी 'भले' लोग आना बंद कर देंगे। सामाजिक जीवन के 'मनमोहन सिंह' को अपनी आवाज एवं उपस्थिति को बुलंद करना होगा नहीं तो सामाजिक कार्यकर्त्ता एक 'बदनाम' नाम हो जाएगा।

अनमोल वचन

❐ सर्वप्रथम अपनी आत्मा को देखो-परखो। यदि वह शाश्वत दिखे तो एक कुशल शिल्पी की तरह उसे सर्वमान्य श्रेष्ठ बनाने में संलग्न हो जाओ। **- प्लेटो**

❐ अगर हममें शक्कर का गुण है तो हम समाज में ऐसे विलीन हो जाएंगे जैसे सिन्धु में नदी या बिन्दु। सिन्धु में विलीन होने वाला बिन्दु ही एक दिन महान बन जाता है। **- विनोबा**

❐ सबसे अधिक सुखी और सम्पन्न समाज वही कहला सकता है जिसमें व्यक्ति-व्यक्ति परस्पर स्नेह-सौजन्य एवं सौहार्द की आधारशिला देना जानते हो। **- गेटे**

❐ हर व्यक्ति स्वयं में स्वतंत्र महत्व रखता है। व्यक्ति ही यथार्थ है, परन्तु निर्व्याज और निरुपायाधिक प्रेम से दो या अधिक व्यक्तियों का सह जीवन मधुर तथा मुक्त होता है। इसलिए वासना-रहित प्रेम ही सहजीवन का अमृत है और इसका ही सार नाम विनय है। **- दादा धर्माधिकारी**

❐ दो क्षुधित व्यक्ति एक क्षुधित व्यक्ति से दुगुने क्षुब्धित हो सकते हैं लेकिन दो खूंखार व्यक्ति एक खूंखार व्यक्ति से दसेक गुना अधिक विषाक्त होते हैं। **- जार्ज वर्नाडा शा**

***

राजस्थान का वैश्य व्यापारी वर्ग भले ही वे कहने को राजस्थानी हैं उनका दिल हिन्दुस्तानी है

✍ बालकृष्ण गोयनका, चेन्नई

भारत में प्राचीन काल में व्यापारी अपनी टोली के साथ भारत के बहुत भागों में वाणिज्य के लिए निकलते थे। उनका अपना एक राज्य सा होता था। ऊंट, खच्चर, घोड़े, बैल गाड़ियां। सेठ के लिए एक रथ रहता था। अपना माल बेचने के लिए नाना प्रकार की वस्तुएं रहती थी, फिर जहां जो वस्तु ठीक मूल्य पर मिलती, उसे लाद लेते थे। जहां जिस वस्तु की मांग होती ठीक दाम मिलते, बेचते रहते थे। व्यापार की वस्तुओं के साथ बर्तन, भोजन का सामान, कपड़े, बिछौने, एक वैदराज, रसोइया नौकर भी साथ रहते थे। जहां डेरा डालते वहां भोजन बनाने की व्यवस्था हो जाती, ठहरने और रात्रि विश्राम के लिए तम्बू लग जाता था। एक छोटी सी किन्तु सधे हुए वीरों की शस्त्र सज्जा के साथ सेना रहती थी। यह सेना सुरक्षा के लिए रखना आवश्यक था, नहीं तो कोई भी दल आकर लूट लेने का भय रहता था। उनके साथ छोटे-छोटे व्यापारियों की टोली भी साथ हो लेती थी, जिनके पास स्वयं की सुरक्षा आदि के साधन नहीं होते थे। उस समय मानव समाज में वस्तुओं के विनिमय का माध्यम सिक्का नहीं था। वस्तुओं से वस्तु हस्तानांतरित की जाती थी और इस कार्य के लिए एक ऐसे समुदाय की आवश्यकता थी जो इस परिवर्तन के माध्यम का कार्य करें। आगे चलकर सिक्के निकले। राजस्थान के वैश्य समाज ने इस समय तक इस माध्यम का कार्य किया था, मुद्रा के प्रदुर्भाव होने के पश्चात् भी उन्हीं के हाथ में यह व्यापार रहा। इस समुदाय का नाम व्यापारी समाज पड़ा। जिसमें राजस्थानी वैश्य प्रमुख थे। धन संग्रह उस समय एक बहुत बड़ा गुण माना जाता था। धीरे-धीरे समूचे देश में राजस्थानी वैश्य फैल गए थे और उन्होंने इस धन संग्रह को अपना इष्ट बनाया और जैसे जैसे इस समाज के पास धन बढ़ता गया, इनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई। इस प्रतिष्ठा में और वृद्धि हुई कि मारवाड़ी व्यापारियों ने इस संग्रह के साथ उदारता से दान भी दिये। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में वह प्रतिष्ठा से रहना चाहता है। अत: राजस्थान के व्यापारियों ने धन संग्रह केवल नित्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं किया था। जानबूझ कर चाहे न हो, पर अनजाने इस धन संग्रह की प्रेरणा उन्हें इसलिए हुई थी कि जिनके पास धन था, समाज में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते थे।

१९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जगत सेठों के सिवाय प्रवासी राजस्थानी व्यापारियों की बहुत सी फर्मे मुर्शिदाबाद, कलकत्ता और असम में स्थापित हो गई थी। इनका नियम था कि कोई भी राजस्थानी युवक कलकत्ते या असम में धन कमाने के लिए आकर उनकी गद्दी में ठहर कर खा पी सकता था। उसके साथ उनका व्यवहार इतना प्रेम और सौजन्य का होता था कि उसे इसमें संकोच का अनुभव नहीं होता था। इसके सिवाय कारोबार के लिए भी उसे उनके यहां से ५०० या १००० रुपये बिना ब्याज के उधार मिल जाते थे ताकि वह अपनी कपड़े या गल्ले की छोटी दुकान कर ले। दूसरे और व्यापारी और दुकानदार भी स्थापना मुहुर्त के समय कुछ न कुछ रकम उनके यहां जमा करा देते थे। इस प्रकार मेहनत और ईमानदारी से कुछ वर्षों में उसका व्यवसाय जम जाता था। इस प्रकार मेहनत और मेलजोल से राजस्थानियों ने अपना पांव सुदूर प्रांतों में जमाये और वाणिज्य व्यवसाय और उद्योग की दृष्टि से उन स्थानों को उन्नत किया एवं खुद भी सम्पन्न हुए।

चार सौ वर्ष पहले मुगल बादशाह अकबर के समय में हमारे कुछ पूर्वज राजस्थान से दिल्ली और आगरा आकर बस गये थे। उनकी गणना वहां के प्रतिष्ठित व्यापारियों में होती थी। यहां तक कि उनकी आव-भगत बादशाह के यहां भी थी। १७वीं सदी में बंगाल की हाकिमी जब मुर्शीद कुली खां को मिली तो वह अपने साथ आगरे से कुछ विश्वस्त राजस्थानियों को रसद और दुकानदारी के काम के लिए बंगाल ले आया क्योंकि हिसाब-किताब, मेहनत, तोलजोख में उनकी साख से नवाब बहुत प्रभावित था। इन्हीं राजस्थानियों ने बंगाल में अपने अपने व्यवसाय को जमाया। १८वीं सदी के बाद तो बंगाल के इतिहास की हर परत में जगत सेठों के घराने का वर्णन है। वे नवाब के अर्थ मंत्री के सिवाय प्रमुख सलाहकार भी थे। यहां तक कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भी बहुत बार उनकी कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था। जब देश में कोई सर्वभौम सत्ता नहीं थी, असुरक्षा व अराजकता ज्यादा थी; रेल, तार, कोई भी प्रचलित नहीं थे, आये दिन लाखों रुपयों के माल व रोकड़ की वे बीमा करते थे। बीमा व्यवस्था अत्यंत सरल किन्तु वैज्ञानिक थी। बीमा का काम बड़ी सच्चाई और ईमानदारी से होता था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी भी इन व्यापारियों से बीमा करवाते थे। चीन, मस्कट, लंदन आदि के लिए भी बीमा करने के साक्ष्य पुराने संग्रह से मिले।

कई बार मराठे स्वर्णभूमि बंगाल की प्रसिद्धि सुनकर बड़ी बड़ी फौजों के साथ यहां लूटपाट के लिए आये, परन्तु जगत सेठों ने करोड़ों रुपये अपने पास से देकर उन्हें वापस कर दिया और गरीब जनता को उनके अत्याचारों से बचा लिया।

२०वीं शताब्दी में प्रथम महायुद्ध के बाद मारवाड़ी आयात निर्यात करने लगे तथा उद्योग धन्धे स्थापित करने लगें। प्रांतों की

सामूहिक साधना

"साधना सामूहिक तौर पर होनी चाहिए," इसका इतना ही अर्थ नहीं कि मनुष्यों को इकट्ठा कर साधना करें। बल्कि इसका अर्थ यह है कि "समूह ही जीवन है।" व्यक्ति के जीवन में समाज का जितना हिस्सा है, उतने ही अर्थ में वह जीवन माना जाएगा। समाज से अलग जीवन हो ही नहीं सकता। इसलिए हमारा यह सद्गुण सामाजिक होना चाहिए।

वैराग्य को ही लीजिए। वह उचित है या अनुचित तथा कितनी मात्रा में उचित है और कितनी मात्रा में अनुचित? इन चारों प्रश्नों का उत्तर कुल समाज की दृष्टि से सोचकर ही दिया जायेगा। समाज के लिए जितनी मात्रा में जरूरी हो, उससे अधिक मात्रा में अगर किसी में वैराग्य हो, तो या तो वह व्यक्ति एकांगी वैरागी माना जाएगा, या उसमें विकृति मानी जाएगी। इस तरह सभी गुणों के बारे में सामाजिक दृष्टि से सोचना होगा।

कोई भी गुण व्यक्तिगत नहीं रखना चाहिए। उसे समुदाय में व्यापक बनाना चाहिए। जब तक गुण को सामूहिक रूप नहीं देते, तब तक उसकी ताकत ही प्रकट नहीं होती। हिन्दुस्तान में व्यक्ति की महिमा बहुत प्रकट हो चुकी है। लेकिन हम नहीं कह सकते कि यहां के लोगों की औसत ऊंचाई दुनिया के दूसरे देशों से ज्यादा हो गई। यहां केवल ऊंचे-ऊंचे हिमालय जैसे सत्पुरुष दीख पड़े हैं, बाकी सारी जमीन अपनी ही जगह है। इससे कोई लाभ नहीं।

गुणों की प्रक्रिया व्यापक बनानी होगी। हमें यह समझने की जरूरत है कि सत्य, दया, प्रेम आदि गुणों को महापुरुषों के ही गुण समझ कर हम निष्ठुर बने रहेंगे, तो देश आगे नहीं बढ़ेगा। प्रेम और दया का जो प्रयोग महापुरुषों ने अपनी जीवन में किया, उसे सारे समुदाय में लागू करना हमारा काम है।

- विनोबा भावे

राजनीतिक, सामाजिक गतिविधि में भी भाग लेने लगे। बंगाल में नमक सत्याग्रह और विलायती कपड़ों की दुकानों पर धरने के सिलसिले में न केवल मारवाड़ी पुरुष बल्कि महिलायें भी जेल गई। जिस प्रांत में मारवाड़ी कमाते रहते थे, उस प्रांत के धार्मिक कार्यों में ये मुक्त हस्त से खर्च करते रहे थे। असम, बंगाल, बिहार, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र एवं अन्य प्रांतों में इनके द्वारा संचालित स्कूल, पुस्तकालय और अस्पताल एक नहीं अनेक देखने को मिलेंगे।

स्वराज प्राप्ति के बाद भारत छोड़कर जाते समय अंग्रेजों से उनका अधिकांश उद्योग एवं कारोबार राजस्थानियों के हाथ आया और उन्होंने इसे न केवल नष्ट होने से बचाया बल्कि और भी बढ़ाया है। भारत के विभिन्न भागों में कम बेसी यही इतिहास है।

राजस्थान के वैश्य समुदाय को स्थानीय लोग क्यों मारवाड़ी कहने लगे थे। पहले केवल जोधपुर और उनके आसपास के क्षेत्र को मारवाड़ न कहकर प्राय: समूचे आधुनिक राजस्थान को मारवाड़ कहते थे। इस क्षेत्र में रहने वाले मारवाड़ के वैश्यों के समुदाय, ऐसे समय जब यातायात के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे, जिस प्रकार सारे देश में फैल गये और बिना पूंजी के ही जिस प्रकार समूचे देश के रोजगार धन्धों में छा गये, वह इस देश की ही नहीं सारे संसार की एक अनोखी घटना है। बहुत लोग मारवाड़ियों के लिए व्यंग से टिप्पणी करते हैं कि वे यहां लोटा और रस्सी लेकर आये थे, आज इतने समृद्ध हो गये। वस्तुत: इसमें इस समुदाय को फक्र है कि राजस्थान में प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है। पानी की घोर किल्लत है, राजस्थान जैसे भौगोलिक स्थिति में यदि मारवाड़ियों के सिवा दूसरी कौम होती तो वह हाथ में लोटा और डोरी लेकर नहीं अपितु कटोरा लेकर आई होती। मतलब यह कि परिश्रम करने, व्यापार बुद्धि का ज्ञान राजस्थानियों में है तभी तो वे लोटा और डोरी लेकर निकले, जहां भी गये सफलता प्राप्त की। उन्हें व्यापार बुद्धि, कड़ा परिश्रम, ईमानदारी के साथ साथ विशेष गुण रहा कि वे जहां भी गये, वहां के होकर रह गये, जनमानस में समरस हो गये, वहां के लोगों में हिलमिल गये। सब लोगों के साथ एक ही समाज रूपी शरीर के अंग होकर रहने लगे। मारवाड़ी समाज कम लेकर बहुत देने वाली कौम है। देश के मारवाड़ी समाज चाहे जिस माध्यम से कमाता हो, अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक उत्थान एवं जन कल्याण के कार्यों पर खर्च करता है। अपने परिश्रम और व्यापारिक बुद्धि की विशेषता से उन प्रांतों की व्यापारिक और औद्योगिक उन्नति में भी पर्याप्त रूप से सहायक होते हैं और अपने अध्यवसाय से उपार्जित की हुई पूंजी का बड़ा हिस्सा उन्हीं प्रांतों के उद्योग धंधों, जमीन जायदाद आदि स्थावर सम्पत्ति में लगा देते हैं, जिससे उन प्रांतों की सम्पन्नता बढ़ती है। लोकहित के कार्यों में भी उनकी आर्थिक साहयता कम नहीं रहती। मारवाड़ी समाज आज भारत के कोने-कोने में फैला हुआ है और शायद ही कोई ऐसा स्थान हो जहां मारवाड़ी बंधु बसे न हो। जन्मभूमि हमारी राजस्थान और हरियाणा है, परन्तु जिस जगह भी हम गये हमने उसे अपनी कर्म भूमि माना है। महाराष्ट्र में हम जहां महाराणा प्रताप का स्मरण करते हैं, वहां छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रति भी हमारी उतनी ही श्रद्धा एवं भक्ति है और वे हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। हमारे लिए जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों ही समान हैं और यही कारण है कि मारवाड़ी समाज जहां भी गया, वहां के जनमानस में समरस हो गया।

एक समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में टाटा स्टील नगर विभाग के महाप्रबंधक सैय्यद मजहर हुसैन ने कहा कि देश के कोने-कोने में उन्होंने यात्रायें की हैं और हर जगह उन्होंने मारवाड़ी समाज के वाणिज्य कौशल की सराहना की तथा कहा कि मारवाड़ी समाज के लोग जहां गये वहीं के होकर रह गये। भले ही वे कहने को राजस्थानी हैं, किन्तु उनका दिल हिन्दुस्तानी है। मारवाड़ी देश की अनेकता को एक सूत्र में बांधने वाली डोर की तरह है। हिन्दुस्तान की राजनीति पर अभी अर्थनीति हावी है और अर्थनीति इनके पास है, इसलिए आने वाला कल मारवाड़ी समाज का है। व्यापार के अलावा यह कौम समाज सेवा में इतना सक्रिय है कि इसकी मिसाल दूसरे कौमों में नहीं मिलती।●

Mironda Trade & Commerce Pvt. Ltd.

Time Well (HK) Pvt. Ltd.
Malvika Commercial Pvt. Ltd.
Mercury International
Touch stone Exports

Tower House, 2A Chowringhee Square,
Kolkata- 700069, India.

Phone : (91-33) 2248-3789/2210-8543/
2242-9002

Fax : (91-33) 2248-2856

Email : mercintl@yahoo.com,
cal@touchstone exports.com

सामाजिक चिंतन

✍ ओम लडिया, कलकत्ता

एक वक्त था जब मारवाड़ी समाज, समाज सुधार की दिशा में देश में अग्रणी भूमिका निभाता था। समाज के भविष्य को लेकर इसके नेताओं में दूर दृष्टि होती थी वे समाज के प्रति प्रतिबद्ध होते थे। रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों से जनमानस को मुक्त करने की दिशा में मारवाड़ी समाज के कई समाज सुधारकों ने सार्थक प्रयास किए जिसका समाज पर ठोस असर भी पड़ा। पर्दा प्रथा को समाप्त करने, विधवा विवाह लागू करने एवं स्त्री शिक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हमारे समाज के कई लोगों ने तमाम अवरोधों के बावजूद अपनी लड़ाई जारी रखी और इन सभी में काफी हद तक सफलता भी हासिल की। लोग सचेतन हुए। लेकिन आज ऐसा लगता है कि हम सभी वह सब कुछ भुला बैठे हैं। ढोंग, प्रदर्शन, दिखावा, पाखंड व अन्याय से ग्रस्त हो रहे हैं। हमारा मारवाड़ी समाज, अन्य समाजों की अपेक्षा से अग्रसर हो रहा है एवं ज्यादा प्रभाव में है। इस पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

हमें विचार करना होगा कि क्या परंपरागत रूप से चली आ रही परिपाटियों का अंधानुकरण आज के युग में भी उचित है? फिजूलखर्ची, ढोंग, दिखावा आदि जो प्रवृतियां है उनका निराकरम किया जाना आवश्यक है। भावी संतति और समाज के लिए हम क्या विरासत छोड़ जाएंगे।

गौरतलब है समाज सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है। एक दिन या एक बार में ही सब कुछ हो जाएगा। ऐसा कभी नहीं होता। हमें लगातार यह कार्य करते रहना होगा। युवा किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति होता है। सामाजिक क्रांति की दिशा में युवा वर्ग की महती भूमिका होती है। हमारे मारवाड़ी समाज का आज का युवा वर्ग पहले की अपेक्षा, अधिक शिक्षित, अधिक जागरूक एवं समय के अनुसार सचेतन है। यह दायित्व उन्हें वहन करना होगा। समाज सुधार के इस आंदोलन को वह आगे बढ़ाए, इसमे सक्रिय रूप से भाग ले और समाज सुधार की प्रक्रिया वह स्वयं से शुरू करे, अपने निजी परिवार से इस दिशा में शुरुआत करें।

अपनी आचार संहिता का स्वयं निर्माण करें क्योंकि इसके लिए स्वयं आप से अच्छा और कोई नहीं हो सकता। अपने विवेक का इस्तेमाल करें तथा वर्तमान और अपनी परिस्थितियों के अनुसार एक संशोधित नई परिपाटी का आरंभ करें। इसके लिए किसी नेता की प्रतीक्षा न करें।

मनुष्य के सामाजिक जीवन में विवाह एक महत्वपूर्ण अवसर है। विवाह बंधन में आबद्ध होने के बाद ही दो भिन्न परिवारों के वर वधू समाज में एक इकाई का स्थान पाते हैं। विवाह एक संस्कार है। दो परिवारों का एक हार्दिक मिलन है। अपनी गरिमा और मर्यादा में इस संस्कार उत्सव का पालन किया जाना जरूरी है। इस ओर कुछ युवाओं का ध्यान गया भी है। शादी विवाह के मामलों में कुछ युवा सादगी को भी प्रश्रय देने लगे हैं। अनावश्यक तामझाम व धूम धड़ाके के पक्ष में नहीं है। इस दिशा में कुछ और आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं जो इस प्रकार है।

दहेज प्रथा के उन्मूलन की दिशा में हमें ठोस प्रयास करना होगा।

कर्ज लेकर शादी न करें। सामर्थ्य के अनुसार करना है वह करें। इसका उत्तरदायित्व वर पक्ष पर जाता है जो अपनी मांगों से कन्या के पिता को कर्ज लेने पर विवश न करें। वधू पक्ष की सामर्थ्य के अनुसार ही विवाह समारोह का आयोजन करें। आपका यह व्यवहार सम्मानीय माना जाएगा।

शादी से पहले सिर्फ एक कार्यक्रम पारिवारिक व टिकटम संबंधियों को लेकर आयोजित करें। 'मिलनी' हृदय- मिलन का अवसर है। इस मौके पर रुपयों की लेन-देन ने करके पुष्प आदान-प्रदान से एक दूसरे का सम्मान करें और गले मिलें। यदि बहुत जरूरी लगे तो प्रतीकात्मक रूप में चालू करेंसी के सिर्फ चार रुपयों से स्त्री-पुरुषों की मिलनी का कार्यक्रम करें।

विवाह कार्यक्रम दिन में ही संपन्न हो तो बहुत उत्तम है। इससे फिजूलखर्ची की बचत होगी। विवाह के अवसर पर आइटम भोजन व रिसेप्शन में २५ से अधिक आइटम न हों। भोजन की व्यवस्था परिवार व निकटतम लोगों व संबंधियों तक ही रहे। विवाह के मौके पर गीत समारोह का, भोंडा प्रदर्शन एकदम बंद हो। विवाह संबंधी लेन-देन का प्रदर्शन न किया जाए। उदाहरण स्वरूप विवाह मौके पर मामा परिवार द्वारा दी गई सामग्री की एव दान के समान का दिखावा बंद किया जाए।

मारवाड़ी समाज में आज भी विवाह में कई रस्में हैं जिनका आज के समय में कोई अर्थ नहीं रह गया है जैसे तेल बान या सिर गूंथीं की रस्म। आज लड़कियां ब्यूटी पार्लर जाकर अपनी अभिरुचि के अनुकूल स्वयं को सजा सवार लेती है। जहां हर तरह से सौदर्य की अभिवृद्धि की जा सकती है। ऐसे में सिर गूंथी की रस्म के नाम पर अनावश्यक तामझाम करने का कोई औचित्य नहीं है। ऐसे ही एक रस्म है जुआ जिसे विवाह की रस्म का दर्जा दे दिया गया है। जो बिल्कुल ठीक नहीं है। इससे जुआ खेलने की प्रवृति को बढ़ावा मिलता है। जुआ की आदत कितने परिवारों को बर्बाद कर चुकी है। इस आदत से बचाने की जरूरत है। जलेबी के साथ रुपया देने की प्रथा का चलन हास्यास्पद सा लगता है। ये सब एक तरह का प्रदर्शन और फिजूलखर्ची है जिसका न तो विवाह संस्कार से कुछ लेना-देना है न ही धर्म से इसका कोई संबंध । यह सब बंद किया जाना चाहिए।

आजकल विवाह के अवसर पर हमारे समाज के लोगों में महंगे से महंगे निमंत्रण पत्र बनवाने की होड़ सी लगी है जो मिथ्या -भिमान व झूठे प्रदर्शन के सिवा कुछ नहीं । हर कार्ड कुछ समय बाद रद्दी की टोकरी में ही जाता है। इस फिजूलखर्ची को बंद करने का प्रयास किया जाए। कुछ लोग कार्ड पर भगवान का फोटो भी छाप देते हैं जो ठीक नहीं है क्योंकि जहां तहां यह पांव के नीचे भी आते हैं। यह अत्यंत ही दुख का विषय है कि जिस

मारवाड़ी समाज में सुधार की प्रक्रिया पांचवें और छठवें दशक में तेजी से आगे बढ़ी थी और जिसकी शुरुआत आजादी के पूर्व ही हो चुकी थी वह आज लगभग समाप्ति की ओर दिख रही है। श्री सीताराम सेकसरिया, बृजलाल बियाणी, सेठ गोविंददास, भागीरथ कानोड़िया, रामकुमार भुवालका, भंवरमल सिंघी, ईश्वर दास जलान आदि ने मारवाड़ी समाज के सुधार की दिशा में जो कदम उठाए उनकी पहल भी अपने घर परिवार से शुरू की थी। जैसे विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा वगैरह। इन स्मरणीय समाज सुधारकों के एक-एक कर दिवंगत होते चले जाने के बाद कोई दूसरा ऐसा व्यक्तित्व सामने नहीं आया। समाज में जो नवधनिक वर्ग आया उसने (एक तरह से समाज सुधार की दिशा में जो कुछ किया फेर दिया) नई-नई कुरीतियों और विकृतियों को जन्म दिया जो इस समाज के लिए अभिशाप बनती जा रही है। इस पर ध्यान देकर गहराई में सोचने और इन कुरीतियों और विकृतियों से मारवाड़ी समाज को बचाने की दिशा में कारगर कदम उठाए जाने की जरूरत है।

सामूहिक विवाह एक आदर्श पद्धति है । इसकी ओर लोगों को आकर्षित किया जाए। उसे उचित गरिमा दी जाए। इस आदर्श विवाह पद्धति को दयनीय स्वरूप दे दिया गया है। जिससे इस प्रकार के आयोजन में शामिल होने वाला उभय पक्ष अपने आपको अत्यंत अपमानित, दयनीय समझने की मनोदशा में पहुंच जाता है और स्वयं को गरीबी का प्रतीक समझने लगता है। इस वजह से कई लोग चाहकर भी इसमें सम्मिलित नहीं हो पाते। इसे सम्मानजक समारोह बनाया जाए। यह बहुत जरूरी है कि आयोजक स्वयं इसमें भाग लें इसे निःशुल्क न करके वर वधू पक्ष को मिलाकर एक निश्चित राशि सहयोग राशि के रूप में ली जाए। इस विवाह आयोजन को सामुदायिक विवाह उत्सव का रूप दिया जाए।

विवाह स्थल :- दक्षिण भारत में कल्याण मंडकम के नाम से पापुलर केंद्रों में इस प्रकार के विवाह कार्यक्रम होते हैं जिसमें अनुशासित रूप से विवाह का आयोजन होता है, जो नियमबद्ध है। खान पान संबंधी नियमों का भी इसमें पालन किया जाता है। इस प्रकार के विवाह स्थल हमारे समाज द्वारा भी बनाए जाए जो आदर्श विवाह चाहने वाले को निःशुल्क या प्रबंध खर्च के रूप में उपयुक्त धनराशि लेकर दिया जाए।

स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में आजकल की कन्याओं को रजस्वला होने से लेकर मातृत्व तक की शिक्षा दी जाए एवं इन्हें पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाए। उन्हें अत्मरक्षार्थ जूडो एवं कराटे की शिक्षा दी जाए। ताकि समय आने पर वह अपनी आत्मरक्षा कर सकें। विवाहोपरांत परिवार में पुत्र न होने पर लड़कियों में हीनभावना आ जाती है। लड़कियों को इस बात का ज्ञान होना जरूरी है कि पुत्र प्राप्ति में नारी का कोई हाथ नहीं होता। यह केवल पुरुष के क्रोमोजोम्स पर निर्भर है। स्त्रियां इसके लिए स्वयं को दोषी न समझें। विवाह से पूर्व एड्स व थैलीसिमिया की जांच आवश्यक रूप से की जाए क्योंकि इसका असर भावी संतति पर पड़ता है।

दान-धर्म आजकल धर्म तथा दान के नाम का व्यवसाय चर रहा है और इसकी खुलकर दुकानदारी हो रही है। बहुत से ठग अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश में हमें गुमराह करते हैं और दिए गए दान का दुरुपयोग करते हैं। हमें दान देते समय पात्र का चयन अपने आपमें सोच समझ कर उसकी जरूरत पूरी की जाएं। उदाहरण के लिए हम एक ब्राह्मण को कुछ वस्तु दान देते हैं लेकिन अगले ही दिन वह उन वस्तुओं को बाजार में औने -पौने दाम में बेच देता है और फिर रुपया संग्रह करता है। अब यदि वह वही सामान सही अर्थों में किसी जरूरतमंद को दान में दिया जाए तो वह उसे कृतज्ञता से स्वीकार होगा और हृदय से आशीर्वाद देगा। यह एक सही जरूरतमंद को दिया गया सही दान होगा।

गरीब वही है जो अपने साधनों से अपनी आवश्यक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है और उसकी जरूरत को पदार्थ रूप में पूरी करना ही एक सच्ची सेवा है। अपाहिजों व निराश्रितों की मदद के नाम पर अक्सर लोग अपने पास सेवा के नाम पर आते हैं, मोटी रकम आपसे लेते हैं और उससे झूठा आयोजन करके आपको खुश करके अपना उल्लू सीधा करते हैं। उदाहरण स्वरूप व्हील चेयर अपाहिजों को देने का कार्यक्रम । इसमे एकाध जगह यह पाया गया कि जो व्हील चेयर किसी एक कार्यक्रम में दिया गया फिर उसे वापस ले लिया गया। दुबारा फिर उन्हीं व्हील चेयर को दूसरे कार्यक्रम में दिया गया इस तरह से आपके द्वारा दी गई निःस्वार्थ मदद का आयोजकों ने दुरुपयोग किया। सेवा वही जो आप स्वयं बिना किसी बिचौलिये की मदद से सेवा करें। सेवा भावना के नाम पर नकद न देकर, सामान या पदार्थ के रूप में दान दें या उनकी मदद करें।

वर्तमान में नेत्रदान व रक्तदान सबसे महत्वपूर्ण है। इस पर युवा व बुजुर्ग ध्यान दें। रक्तदान एक अनमोल जीवनदायिनी दान है और रक्त का कोई विकल्प नहीं है। जरूरत पड़ने पर सिर्फ मानव के रक्त से ही रोगग्रस्त मानव की रक्षा की जा सकती है। दुख की बात है कि भारत जैसे बहुसंख्यक देश में रक्त के अभाव में किसी की मृत्यु हो। अतः हमें संकल्प करना है कि 'Let no one die for want of Blood' नेत्रदान एक ऐसा अनमोल दान है जिससे दो अंधे व्यक्तियों को दृष्टि प्राप्त होती है। आप मरणोपरांत नेत्र दान की संकल्प करके एक अमरत्व को प्राप्त कर सकते हैं।

धार्मिक प्रवचनों का इन दिनों बड़े-बड़े पंडालों में विशाल आयोजन होता है जो धर्म के नाम पर एक फिजूलखर्ची है । ऐसे आयोजनों में करोड़ों रुपए का खर्च आता है। कम से कम एक महीने ५० व्यक्तियों का श्रम व्यर्थ होता है। ऐसे आयोजन में जाकर आत्मसंतुष्टि मिलती है या नहीं इस विषय की आलोचना नहीं करना चाहता। हां, इतना जरूर है कि ऐसे आयोजनों में शामिल होकर पिकनिक का आनंद जरूर मिलता है। आजकल बहुधा घरों में यह भी देखा जाता है कि बहुएं या बेटियां किसी बाबा या दादी जी के धार्मिक आयोजन में ज्यादा तत्पर रहती है लेकिन घर में बुजुर्गो की अवहेलना करती है।

ईश्वरभक्ति : यह आपका निजी मुद्दा है और आप इसे किस रूप में कैसे अपनाये यह भी आपका अपना निर्णय है। मेरा मत है कि हम ३३ करोड़ की मरीचिका को छोड़कर यदि एक देवी/देवता में अपनी सम्पूर्ण आस्था, श्रद्धा, प्रेम, सम्मान समर्पित कर दें और उसी एक देवता को अपना आराध्य माने तो मैं दृढ़ता के साथ कह सकता हूं कि आपको अधिक विश्वास और संबल

आत्म-ज्ञान

- आंगीरस

कथा न इतिहास की है न पुराणों की। कथा उपनिषदों की है, ढाई हजार वर्ष से पुरानी।

कहते हैं उत्तरी भारत में तब एक राज्य था महावृष और वहां का राजा था जनश्रुति। सभी सुख वहां विराजते थे, क्योंकि राजा न्यायी था, दयालु था और बहुत-बहुत दान पुण्य किया करता था।

और प्रजा संतुष्ट थी कि राजा के प्रसाद से सब को अन्न मिलता है, किसी को कष्ट नहीं। और राजा प्रसन्न था कि उसके धर्म-कर्म की बिरद देश-विदेश फैली है और ऋषि भी कहते हैं कि अब दोनों लोक उसके पास है।

एक बार गर्मियों की रुत थी। सांझ आई तो राजा अपने सतखण्डे महल की अटारी पर लेटा। उसी दिन कोई यज्ञ पूरा हुआ था। सौ-सौ आशाएं राजा के जी में हिलोर ले रह थीं। तभी हंस हंसिनी का एक जोड़ा उधर से उड़ता गया।

क्या जाने क्या हुआ कि एकदम से हंसिनी को हंस ने चेतावनी दी, ''संभल कर! नीचे राजा लेटा है, इसके पुण्य प्रताप की दीप्ति में कहीं पंख न झुलस जाये।''

''तुम्हारी बातें!'' हंसिनी हंसी, ''इसका भी दान-पुण्य क्या मन का है यह तो कीर्ति के लिए पागल है और गर्व से भरा हुआ है। सच्चा पुण्य तो रैक्व का देखो!''

राजा सन्न रह गया। फिर तो किसको रैन और कहां का चैन। मंत्री, पुरोहित, सैनिक सभी दौड़े रैक्व की खोज में। कौन यह रैक्व, कहां का, जिसके आगे हमारे राजा का भी पुण्य प्रताप कुछ नहीं।

और एक एक नगर, एक एक द्वार देखकर वे लौट आये। कोई रैक्व वहां कहीं न था। तब राजा स्वयं निकला। साथ में बिपुल उपहार सामग्री : सौ गाड़ी अन्न वस्त्र सोना मोती, हजार गउएं दूध देती और कुशल दास दासी।

कहां-कहां न भटका वह! तब एक दिन किसी ने बताया और राजा ने देखा। निर्जन सी राह किनारे कहीं यात्रा से लौटी गाड़ी खड़ी थी। वृक्ष की छाया में बैलों के बीच लू का वेग झेलता, वह लेटा था। कितना शान्त, निश्चिन्त, करुणामय।

और उपहार सामग्री आगे किये श्रद्धा भाव से राजा ने कहा, ''महात्मन्, मुझे दान-पुण्य का मर्म सिखायें! उस ज्ञान का मुझे उपदेश करें जिससे शान्ति प्राप्त हो।''

रैक्व लेटे से बैठ गये और मधुर मुस्कान से बोले, ''राजन दान-पुण्य का मर्म सिखाने का नहीं, आत्म साधना का विषय है। सौ-सौ राज्य देकर भी आध्यात्मिक ज्ञान खरीद न सकेंगे।''

लौट आया राजा। पर जो-जो बात जहां लगी थी, अमोघ थी। भीतर-भीतर वे सालती रही और छटपटाहट में वह एक दिन अकेला ही फिर गया और जिज्ञासु भाव से उसने विनय की।

उसी मुस्कान से रैक्व ने स्वागत किया और पास बिठा कर बताया, ''राजन, महत्व धर्म-कर्म का नहीं होता, आत्म-साधना का है। साधना और ज्ञान की बात अहंभाव की है। साधना और ज्ञान है यही जहां अहंभाव न हो। दान दो : पर वह कामना से जनमा न हो, आशा से बंधा न हो।

और कहते हैं राजा जनश्रुति के राज्य में जैसी दिवाली उस दिन मनी, कभी पहले किसी ने सुनी भी न थी। यदि हम भी दान-पुण्य का मर्म समझे और घर-घर वैसी दिवाली मनायें।●

प्राप्त होगा और आपकी वांछित मनोकामनायें चमत्कारिक रूप से सफल होगी।

मृतक संस्कार : हमारी मान्यता है कि आत्मा कभी मरती नहीं, पलक भर में एक शरीर छोड़ यह किसी अन्य शरीर में प्रवेश कर जाती है। तो फिर आत्मा की शांति का प्रश्न कहां आता है? अंतिम संस्कार जला देना या जमीन में गाड़ देना है। अत: हम जो आत्मा के नाम पर संस्कार कर रहे हैं उसका क्या औचित्य है? इसके नाम पर जो दान धर्म करते हैं उसका क्या मतलब है? इन बेबुनियाद की प्रथा रस्मों से मुक्त होने की आज जरूरत है। दाह संस्कार के बाद शांति के नाम पर दान धर्म पूजा पाठ का जो दिखावा है वह एक तरह गुमराह करने वाला ही है। शांति के नाम पर गरूड़ पुराण का पाठ, केवल पुराण के नाम पर मृतक के परिवार को डरा कर अधिक से अधिक रुपया ऐंठना हैं। मृतक को तो कुछ नहीं मिलता। दान की सामग्री अगले ही दिन दुकानदार के पास फिर बिक्री के लिए पहुंच जाती है। बनिया व ब्राह्मण मिल कर मुनाफा कमाते हैं।

दान पुण्य यदि करना ही है तो मृतक के आंख तथा अन्य अंगों का दान करें जिससे किसी को सही अर्थों में लाभ मिल सकें। ब्राह्मण भोज व शाखा दान के स्थान पर यदि चाहे तो सामाजिक मानव कल्याणमूलक कार्यों में सहयोग देकर दान किया जाना चाहिए।

लेखक ने अपने परिवार में ही चार बार मृत्यु के अवसर पर मृतक संबंधी अधिकांश संस्कारों का निषेध किया है और इसमें सम्पूर्ण सादगी अपनायी है। जिज्ञासु पाठकगण उनसे सम्पर्क स्थापन कर सकते हैं। (९८३००८४०७३)

उपर्युक्त तमाम बातों की ओर आप सभी का ध्यान खींचते हुए निवेदन है कि आज नजरिये में बदलाव की जरूरत है। अंथविश्वास से ग्रस्त न होकर पुरानी परिपाटी को त्याग कर गई दिशा दे सकें। भविष्य के लिए एक सुगम व आचरण मूलक स्वस्थ परंपरा बना सके, यह समय की मांग है। आलोचना की परवाह किये बिना हमें सामाजिक कुरीतियों व अंधविश्वासों और पाखंड से अपने समाज को मुक्त करने के लिए उठ खड़ा होना होगा। आरंभ में जो इस प्रकार के आपके साहसिक प्रयासों की आलोचना करेंगे, आगे चल कर वही आपके प्रशंसक भी हो जाएंगे।

एक बार पुन: मैं कहना चाहूंगा कि अपनी आचार-संहिता का स्वयं निर्माण करें क्योंकि इसके लिए स्वयं आपसे अच्छा और कोई नहीं हो सकता।●

रिश्ता सास-बहू का

✍ श्रीमति शारदा अग्रवाल, जमशेदपुर

मानव इस दुनिया में जन्म के साथ ही रिश्तों की दुनिया से जुड़ जाता है। रिश्तों के अनेक ताने-बाने से इंसान को जूझना पड़ता है। उनमें ही एक अति चर्चित एवं पाक रिश्ता है- सास-बहू का। सास-बहू का रिश्ता जितना निकटतम, घनिष्ठ, पवित्र एवं महत्वपूर्ण है उतना ही विवादास्पद। न जाने प्राय: परिवार एवं समाज में इस रिश्ते में इतनी मधुरता, प्रेम व सामंजस्य नहीं देखा जाता जितना होना चाहिए। विचारों का तालमेल एवं भावनाओं की एकरूपता का कहीं न कहीं अभाव अवश्य ही देखा जाता है, क्यों ? कारण अनेक हैं, आइये इस पर हम कुछ विचार करें।

एक लड़की जब अपने दिमाग में सुनहरे संसार के सपने संजोये ससुराल की दहलीज पर जब पहला कदम रखती है तो सास की बाहों का सहरा लेकर। हमारे यहां यह परम्परा ही है कि सास ही बहू को अपने हाथों से डोली से नीचे उतारती है यानि बहू को पहला स्पर्श ससुराल में सास के हाथों का मिलता है, तब बहू एक अनजानी सी भय मिश्रित खुशी का अहसास करती है और यही सोचते हुए घर में प्रवेश करती है कि न जाने सास का स्वभाव कैसा होगा और यदि आगे जा कर उसे सास से मां की सी ममता, स्नेह भरा वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव मिला तो बहू सिर्फ बहू न रह कर अपनी पैदाइशी बेटी से भी बढ़कर बेटी बन दिखायेगी।

एक बार हम अपने अतीत के झरोखे में झांक कर देखें तो जो खुशियां हमें अपनी सास से कभी अतीत में नहीं मिली, उन खुशियों से हम अपनी बहू को न वंचित रखे और जिन सुख सुविधाओं एवं खुशियों की अपेक्षा हम अपनी बेटी के लिए उसकी ससुराल से रखते हैं, वे सभी अपनी बहू को मुहैया कराने में कभी संकोच न रखें। एक बार आप बहू के प्रति अपनी उदारता तो दिखाइए, परिवार में उसे भी अपने अस्तित्व का आभाष कराइये, उसे यह आभाष हो कि वह भी परिवार की एक अति महत्वपूर्ण इकाई है, अपने सासपन के अभिमान से थोड़ा नीचे उतारिये तो ऐसी फिर कोई पाषाण हृदया बहू न होगी जो आपकी बेटी न बन सके।

हां, ससुराल में बहू को भी कुछ सीमाओं का, कुछ मर्यादाओं का निर्वहन करना पड़ता है, उन मर्यादाओं के निर्वहन करवाने में भी आपकी अहम् भूमिका होगी, एक निश्चित स्नेहमयी मां की सी, न कि किसी कॉलेज की अक्खड़ प्राचार्या की सी। बहू अपनी पुरानी आदतों एवं पैदाइशी संस्कारों को लेकर एक नये परिवेश में आई है, हो सकता है आपके घर के तौर-तरीके, रीति-रिवाजों को समझने में उसे कुछ वक्त लगे, तो कोई बात नहीं, कभी जल्दबाजी न करें। धैर्य रखते हुए अपने प्रेम भरे व्यवहार से उसे आप अपने अनुरूप ढाल सकती हैं। अन्त में मैं इतना ही कहूंगी-

'यदि आप देखेंगी, बहू में बेटी की परछाईं, तो बहेगी परिवार में प्रेम की पुरवाई। बहू तो है ही, जब बन जाएगी बेटी, नहीं याद आयेगी, परदेश में बसी हुई आपको अपनी बेटी।

परित्यक्ता नारी और समाज

✍ श्रीमति सुधा गोयल

नारी को मानसिक या शारीरिक रूप से आहत करना ही नारी शोषण है। जिस तरह किसी भी अच्छे कार्य के लिए अलग-अलग पुरस्कार दिये जाते हैं उसी तरह घरेलू दण्ड-नीति में भी कई सजा होती है जैसे - डांटना, धमकाना, पीटना या अपशब्द कहना। नारी शोषण भी जब अपनी चरम-सीमा पर पहुंच जाता है तो उसमें दो सजाएं होती हैं, पहली- हत्या, दूसरी- परित्यक्ता।

नारी शोषण की पहली सजा हत्या के विरुद्ध तो हम अपराधियों को कानून के हवाले कर सकते हैं। किन्तु परित्यक्ता- उसकी स्थिति तो समाज में बहुत बदतर होती है, सभी उसे छोड़ी हुई कहते हैं। चूंकि वह पति द्वारा उपेक्षित है इसलिए ससुराल वालों से किसी तरह की हमदर्दी या रिश्ते की उम्मीद तो की नहीं जा सकती। ऐसी स्थिति में माईके वाले भी साथ नहीं देते। उनका कहना भी यही होता है कि ससुराल में ढंग से रह लेती थोड़ा सहन कर लेती तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। डांट दिया तो क्या हुआ, गुस्से में थोड़ा हाथ उठ गया, तो कौन सा प्रलय आ गया। तुम ससुराल से निकाली गई, यहां रहोगी तो तुम्हारे भाई बहन के लिए अच्छा रिश्ता नहीं आ सकता। सुलह समझौता करवा देते हैं अपने ससुराल वापस चली जाओ इसी में हमारी ईज्जत है और तुम्हारी भलाई भी।

यहां तक की पास-पड़ोस वाले भी परित्यक्ता के लिए दबे मुंह बात बनाने से बाज नहीं आते। कभी-कभी अपशब्दों की बौछार में 'चरित्रहीन' जैसा शब्द भी कह दिया जाता है जो औरत के लिए सबसे बड़ी गाली है।

लेकिन कोई भी यह नहीं जानना चाहता कि उस औरत को किन-किन शारीरिक और मानसिक यातनाओं से गुजरना पड़ा है। ऐसी स्थिति में परित्यक्ता को उसका अधिकार उसका स्थान दिलाने के लिए हमें काफी जद्दो-जहद करनी पड़ेगी और यह काम सर्वगुण सम्पन्न होने के बावजूद हम अकेले नहीं कर सकतीं। अत: जरूरत है किसी ऐसी संस्था की जो ऐसी स्थिति में सिर्फ आश्वासन ही नहीं बल्कि ईज्जत से हक दिला सके। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि अ.भा.म.म.स. इस काम को बखूबी अंजाम दे सकती है। जरूरत है तो समाज के सोचने के नजरिये में बदलाव की। जिस तरह सुराही में जल भरने से ही उसकी सम्पूर्णता है, उसी प्रकार नारी को खुशियां देने में ही इस संस्था की सार्थकता है।

परित्यक्ता नारी की स्थिति को चार लाइनों में बांधने की कोशिश कर रही हूं -

आती है रोज शाम उदासी लिए हुए।
गाती है सांस कंठ में खांसी लिए हुए।१।
यादों के खंडहर में भटकती हूं रात-दिन।
यूं ही थकी निढाल उदासी लिए हुए।२।
मेरे अकेलेपन न सिसक लौट चलें चल।
अब तो तय करना है यह रास्ता पैदल।३।
भेजा था जिन्दगी को सुराही के वास्ते।
लौटी है चुल्लुओं में जरा-सी लिए हुए।।

झारखंड में मारवाड़ी झारखंडियां की भूमिका

✍ डा. मनोहरलाल गोयल, जमशेदपुर

झारखंड भारतीय गणतंत्र री अठाइसवीं राज्य है। इण री जलम बिहार रै पेट सूं १५ नवम्बर २००० नै हुयौ। खूब खुशी मनाई गई। दीया जलाया गया अर पटाका फोड़्या गया। होली जियां अबीर गुलाल उड़ायौ गयौ। कैयो जा सकै है के झारखंड रै जलम री टेम होली, दीवाली अेक सागै मनायी गयी। बीती पंदरा नवम्बर नै झारखंड नाम रौ यो बालक पूरा पांच बरस रौ होयगौ। अठै राजस्थान रा प्रवासियां री, मारवाड़ियां री आबादी केई लाख री है। केई बड़ा-बड़ा नगरां में तो मारवाड़ी ५० हजार सूंलेयर अेक लाख तक है। केई बाजार मोहल्ला मारवाड़ियां रै अथवा मारवाड़ी समाज रै महापुरुषां रै नाम माथै बस्योड़ा है। उणां खातर झारखंड पैली कदै रोजी-रोटी रौ साधन मात्र रैयो हुवैलो। पण आज झारखंड उणां री जलमभोम अर कर्मभोम दोनूं है। जीव, जन्म परण, मरण रौ साक्षी है- झारखंड। झारखंड उणां रौ घर है।

झारखंड निवासी, झारखंडी मारवाड़ियां खातर एक खुशखबर री सूचना मिली है। झारखंड में अबार भाजपा की सरकार है अर सत्ता को प्रबल दावेदार झारखंड मुक्ति मोर्चा ई रैयो है, जिण रा प्रमुख है- दिशोम गुरुजी। उणां मारवाड़ियां रै हित में अेक जोरदार बात कैयी। जकी बात वर्तमान मुख्यमंत्री कोनी कैय सक्या, वा बात भावी मुख्य मंत्री अपणा मूंडा सूं कैय दीनी। बात मूंडा सूं निकली तो दूर तक गई। गुरुजी रै कथन रौ राजनीतिक अर्थ निकालबा को प्रयास हुयौ। केई लोगां इण नै राजनीतिक स्टंट बतार बात नै गंभीरता सूं कोनी लीनी। आपनै बता देवां के गुरुजी के बात कैयी ही। उणां कैयो हो के झारखंड में भीतरी अर बाहरी अथवा स्थानीयता कोई मुद्दो कोनी। ई विषय में कोई झगड़ो-झमेलो कोनी। केई बरस सूं इन प्रदेश में रैवणिया मारवाड़ी भी झारखंड रा मूल निवासी है। सच्चाई आ ई है के जका लोग अैठै बरसां सूं रै रिया है, जिणां रा घर द्वार अठै ई है, जलम, परण, मरण अठै ई हुवै, उण लोगां नै बाहरी बातावरणो गलत है। आ पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी जी आ वर्तमान मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा जी भलांई मतना मानौ, कैवोपण गुरुजी सोरेन सा'ब सार्वजनिक रूप सूं स्वीकार करै है। आ और बात है के सत्ता में आयांपछै भी गुरुजी को यो स्टैंड बण्यौ ई रैसी, के बदल जासी ? राजनीति में रच्या-बस्या नेता कब के पलटी खा जावै अर कुण सो नुवौ रूप दिखावै, इण रो कोई सतूनो कोनी। राजनेता खुद अकसर कैता रैवै है के राजनीति में नीं तो कोई स्थायी दोस्त हुवै अर नी कोई दुश्मन। पण आ बात राजनीति सूं हटकर कैयी गयी है अर देस रै संविधान री भावना नै ध्यान मांय रख कर कैयी गयी है, इण खातर इण रौ स्वागत ई हुयौ।

पण लाख टकां री बात आ है के गुरुजी आ बात कैयी, तो क्यूं कैयी ? के चास (बोकारो) रा प्रयाग जी केजड़ीवाल री इण में कोई भूमिका है ? प्रयाग जी खांटी मारवाड़ी है अर गुरुजी रा सहयोगी है - खासम खास है। झारखंड क्षेत्र स्वाशासी परिषद् रो गठन हुयौ, जणां गुरुजी परिषद् रा प्रमुख हा अर केजड़ीवाल जी पार्षद सदस्य। गुरुजी सूं नजदीकी रौ इसौ सुयोग किणी और मारवाड़ी झारखंडी नै कोनी मिल्यौ। म्हारै ध्यान में तो ओ अेकई नाम है।

संभव है के गुरुजी नै संथाली गांधी मोतीलाल केजड़ीवाल री झारखंड रै प्रति सेवा भावना याद आयी हुवै। स्वाधीनता आन्दोलन री टेम संथाल परगना रा मारवाड़ियां बढ़ चढ़ कर भाग लीन्यौ हौ। अठी नै संथाल परगनौ गुरुजी की सक्रिय राजनीति रौ प्रमुख क्षेत्र रैयो है। कैयो जा सकै है के झारखंड री सत्ता री राजनीति को कुरुक्षेत्र संथाल परगनौ ई रैयो है। दिसोम गुरु जी दुमका सूं कदै चुनाव जीत्या तो कदै हारया। इण हार जीत में दुमका रै मारवाड़ियां री के भूमिका है, ई बात सूं गुरु जी अणजाण कोनी। ई क्षेत्र मांय मारवाड़ियां रै त्याग-बलिदान रो पुराणौ इतिहास रैयो है। दुमका का मोतीलालजी केजड़ीवाल क्षेत्र रै निवासियां री सेवा इण भांत करी के लोग उणां नै गांधी जी जैयां पूजै लाग्या। केजीड़वाल जी संथाल परगना रा गांधी कुहाया। आन्दोलन में मारवाड़ी समाज अपणी प्रमुख भूमिका निभाई, नेतृत्व दीन्यूं, लाठी डंडा खाया अर जेल गया। कइयां नै तो आजीवन काला पाणी की सजा तक मिली। या सच्चाई है के संथाल परगना का मारवाड़ी खुद नै उठै री माटी रा पूत ई मानै। चुनाव री टेम ई मारवाड़ी समाज री भूमिका उल्लेखनीय है। गुरुजी नै शायद इण बात रौ अहसास है के वै किण रा वोटां सूं चुनाव जीतै है। आदिवासियां अर तथाकथित मूल वासियां रै सहारै कोई झारखंडी दुमका सूं चुनाव कोनी जीत सकै।

अठी नै रामगढ़ कैंट इसौ चुनाव क्षेत्र है जठै सूं केई बार मारवाड़ी उम्मीदवार चुनाव जीत्या है। मारवाड़ियां री आबादी रामगढ़ में इतणी कोनी के उणां रै बलबूतै कोई मारवाड़ी उम्मीदवार विधानसभा में पूग सकै। विश्वनाथ चाधरी, बोदूलाल अग्रवाल, यमुना प्रसाद शर्मा, शंकर चौधरी आदि केई इसा नाम है जका विधायक बणर मारवाड़ी समाज रौ गौरव बढ़ायौ। रामजी लाल सारडा और मनोहर टेकरीवाल जिसा केई दर्जन नाम है जका जन सहयोग सूं जन प्रतिनिधि बण्या। सारडाजी तो झारखंड सरकार में मंत्री भी रैया। कैवण रौ मतलब यो है के झारखंड में बस्या मारवाड़ी झारखंड रै जन जीवन का अंग है अर कोई भी राजनीतिक पार्टी मारवाड़ियां की उपेक्षा कर र सत्ता में कोनी आ सकै। ई सच्चाई रौ अहसास शायद गुरुजी नै हुयौ है। संभव है के पैली सूं हुवै। गुरुजी बात जाणता ई हुवैला के संथालां रै 'सफा

होड़' आन्दोलन पर भी मारवाड़ियां री आधी पकड़ ही। दुमका रै महान क्रांतिकारी श्याम कृष्ण अग्रवाल नै आजीवन काला पाणी री सजा मिली ही। झारखंड रा सालिग्राम अग्रवाल, मोतीलाल अमेठिया, विशुन मोदी, नरसिंग मारवाड़ी, बृजलाल डोकानिया, रतनलाल जैन, गौरीशंकर डालमिया, हरिराम गुंटगुंटिया, देवीप्रसाद अग्रवाल, रामजीवन हिम्मतसिंहका, रामेश्वरलाल सर्राफ वगैर: वगैर: मारवाड़ियां रा सैकड़ूं प्रमुख नाम है जणां आन्दोलन में भाग लीन्यूं अर देस खातर अपणौ तन-मन-धन समर्पित कर्‌यौ है। 'बिहार रै स्वाधीनता संग्राम रौ इतिहास' पोथी में इण की विस्तार सूं चर्चा है।

ई बात सूं कोई इन्कार कोनी कर सकै के झारखंड में रैवणिया मारवाड़ी सत प्रतिशत झारखंडी है अर झारखंड खातर अपणूं सैक्यूं समर्पित करबा नै तैयार है। उणां नै कोई बाहरी बतावै तो वो सच्चाई सूं मूंडौ मोडै है। मारवाड़ी समाज झारखंड में रै वै है, तो झारखंड नै ई सौ क्यूं मानै है। पण स्वार्थी नेतां री कमी कोनी। इ सौ कोई तथाकथित झारखंडी नेता मारवाड़ियां नै बाहरी बतावै, तो यो अन्याय है अर अन्याय रौ प्रतिकार करणूं मारवाड़ियां रौ धर्म है। मारवाड़ी समाज सहनशील है पण अपणा हक रै खातर अर स्वाभिमान री रक्षा खातर महाराणा प्रताप भी बण सकै है। मारवाड़ी समाज बीं राजनेता और पार्टी रौ ई साथ देसी, जकी स्वार्थ छोड़र झारखंड री खुशहाली खातर काम करसी। झारखंड रौ सर्वांगीण विकास जरूरी है और मारवाड़ी समाज अपणूं योगदान देबा नै कृत संकल्पित है। नेतावां री अठै कमी कोनी। पण सही नेता री तलाश जारी है जिण रै तन-मन में झारखंड री आत्मा बसै अर जो ईमानदारी सूं प्रदेश री खुशहाली खातर समर्पित भाव सूं काम करै। वो नेता बाबूलाल मरांडी हो सकै है, गुरु शिबू सोरेन हो सकै है, अर्जुन मुण्डा हो सकै है, यशवन्त सिन्हा हो सकै है, इन्दर सिंह नाम धारी हो सकै हैं। संभव है के कोई मारवाड़ी सपूत ई झारखंड रौ नेतृत्व करै अर झारखंड नै समृद्धि, खुशहाली अर सुख शांति देबा में सक्षम हुवै, सफल हुवै। अकबर की टेम राजा मान सिंह झारखंड में राज कर्‌यौ हौ। सिंहभूम, मान भूम, वीर भूम, मान बाजार, राजमहल इणी राजा मानसिंह री याद में बस्या है जका झारखंड में मारवाड़ी भूमिका रौ साक्षात प्रमाण है। पण तब राजशाही ही अर आज लोक शासन की परम्परा है। मारवाड़ी अपणी क्षमता, प्रतिभा अर प्रबंधन में कमजोर कोनी। अवशर मिलणौ चायै।●

दो पल का साथ

– **श्रीमति कोमल अग्रवाल**, जूनागढ़

जब भी तनहाई आकर उदास कर जाए,
मन में गहरी पीड़ा की टीस कोई उठ जाए,
ऐसे में दो पल का साथ तेरा मिल जाए।...
घुटन भरी सर्द शाम जब काटे नहीं कटे,
अनायास होंठों पर तेरा नाम मचल आए
ऐसे में दो पल का साथ तेरा मिल जाए।...
आंखों में जब तेरा प्यार नमी बनकर उभर आए,
मन के आंगन में सपनों का आकाश उतर आए,
ऐसे में दो पल का साथ तेरा मिल जाए।...
तेरी खुशबू पाकर हवा जब ईर्द-गिर्द ठहर जाए,
सोते में भी तेरी छवि आंखों में भर जाए,
ऐसे में दो पल का साथ तेरा मिल जाए।...
होता है एहसास अचानक तेरे आने का,
तब कानो में जैसे कोई मीठा संगीत गुंजाए,
पीड़ाओं का जहरीला सागर भी मैं पी लूं
बस ऐसे में दो पल का साथ तेरा मिल जाए।...

राजस्थानी गजल

– **लक्ष्मणदान कविया**, काव्यशास्त्री

खुशामद वोट री खातर वंधी है आज भारत में।
दिनो दिन जा रयौ बधतौ स्वारथी राज भारत में।।

वोट हित काज करबा री हांमलां भर लेवै झूठी।
जीतियां भूलेवै जनता नेतावां काज भारत में।।१।।

पद अर कुरसियां चिंता सतावै राजनीति में।
बरसैं नीं नेता बादलिया घुरै है गाज भारत में।।२।।

पईसां लालसा पूरी जेबां निज लागिया भरवा।
नेतावां आपसी अेको खुजावण खाज भारत में।।३।।

केवां किण नूं सुण कुण है सासां में लाय लागी है।
आसावां ऊपरै पांणी फिरै है आज भारत में।।४।।

नीती आदरस नहीं नैड़ा मरजादां कंठ मोसै है।
दळां बिच होड़ लागी है झांपण ताज भारत में।।५।।

लूटीजै लाज अबलावां नहीं रूजगार मोट्यारां।
आंतरौ गरीब'र धनिकां दिलां री दाझ भारत में।।६।।

विदा की बेला

– **डा. लखबीर सिंह 'निर्दोष'**

जाते जाते रुकी है क्यों वासन्ती पवन, चमन में छूट गया कहीं, हृदय मन!
फूल बार बार कांटों से एक ही बात पूछे, इतना खिल कर सुरभि में मथ कर क्या सूझे
सारी निधियां छोड़ चुराता कौन जीवन धन!
भोर में जब होते कलियों के परिधान ढीले
रजनी अश्रुकणों से करे कमल दल गीले, सपन बन खो जाते कहीं किरणों के कंगन।
इन्हीं डालियों पर थे फूलों के न्यारे नीड़ बने, कोयल की कू कू से गुंथे थे प्रेम कुंज घने
अब न प्रेमिल गीत गुनगुन करेंगे भंवरे गुंजन, जाते-जाते रुकी है क्यों वासन्ती पवन।

50-60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700001
Ph : 033-2242-2585/4654 55252587
E-mail rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR

Agricultural PIPES & FITTINGS

Sanitation & Plumbing Systems

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

७१वां स्थापना दिवस समारोह

मारवाड़ी समाज का गौरवपूर्ण योगदान – मंत्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा

सम्मेलन की आज की आवश्यकता –पद्मभुषण हरिशंकर सिंहानिया

नेपाल में मारवाड़ियों का स्वागत – नेपाल कोन्सुल जनरल डॉ. कुसुम

स्थानीय विद्यामंदिर सभागार में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ७१वां स्थापना दिवस समारोह बड़े ही धूमधाम से २४ दिसम्बर २००५ को सम्पन्न हुआ।

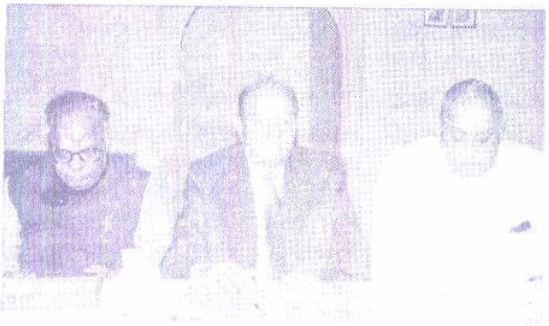

संसदीय कार्यमंत्री प्रबोधचन्द्र सिन्हा, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान एवं मुख्य अतिथि पद्मभूषण हरिशंकर सिंघानिया

समारोह का उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्य एवं आबकारी मंत्री श्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा ने कहा कि देश की आर्थिक प्रगति में मारवाड़ी समाज का गौरवपूर्ण योगदान रहा है। इसके अलावा मारवाड़ी समाज सदैव सामाजिक कार्यों में आर्थिक अनुदान देने में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। मुख्य वक्ता के रूप में कोलकाता में नेपाल के कन्सुल जनरल डा. गोविन्द प्रसाद कुसुम ने भारत नेपाल के ऐतिहासिक एवं मधुर सम्बन्धों की चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान में नेपाल में स्थिति सामान्य है एवं बड़ी संख्या में पर्यटक आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल में मारवाड़ी समाज एक बड़ी संख्या में बसता है।

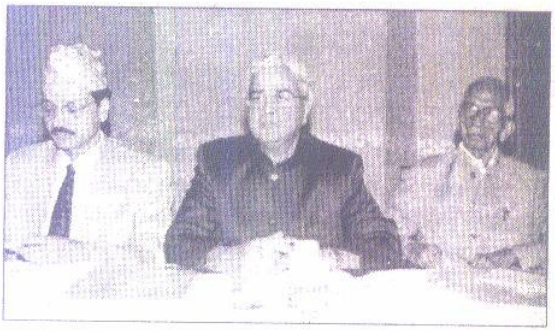

नेपाली कोन्सुल जनरल डा. गोविन्द प्रसाद कुसुम, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, पूर्व महामंत्री दीपचन्द नाहटा।

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, कोषाध्यक्ष

उन्होंने समाज को नेपाल में आर्थिक निवेश का आह्वान करते हुए उनका स्वागत किया।

इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व सभापति एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी पद्मभूषण श्री हरिशंकर सिंहानिया का उनकी देश, उद्योग एवं समाज की सेवा के लिए अभिनन्दन किया गया। श्री सिंहानिया इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से विशेष रूप से पधारे थे।

श्री सिंहानिया ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन जिसकी स्थापना पूर्वजों ने ७० वर्ष पहले की थी उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है। श्री सिंहानिया ने कहा कि सिर्फ समाज सुधार ही नहीं, नई आर्थिक व्यवस्था में जो नये अवसर एवं नई चुनौतियां हैं उसमें सम्मेलन एक भूमिका निभा सकता है। श्री सिंहानिया ने देश की आर्थिक तस्वीर प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत एक आर्थिक ताकत के रूप में उभर रहा है। उन्होंने अपने सम्मान के लिए सम्मेलन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पूर्ण सहयोग एवं समर्थन

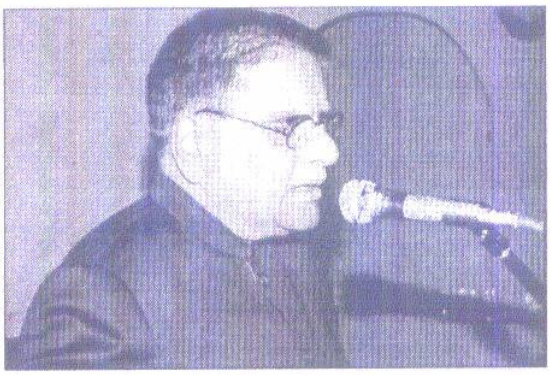

महामंत्री, श्री भानीराम सुरेका

का आश्वासन दिया।

आरम्भ में कुमारी अनुष्का सुरेका ने गणेश वन्दना की। संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने अतिथियों को मंच पर आमंत्रित किया एवं पुष्प गुच्छ से उनका सम्मान किया गया। महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने अपने संक्षिप्त स्वागत भाषण में सम्मेलन की गत वर्ष की गतिविधियों की जानकारी दी। सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सभापति श्री मोहन लाल तुलस्यान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में समाज की बदलती उज्वल तस्वीर की चर्चा की। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने अपने धन्यवाद भाषण में मारवाड़ी समाज को आर्थिक क्षेत्र में नई सफलता के लिए प्रेरित किया।

सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष, उद्योगपति, समाजसेवी पद्मभूषण श्री हरिशंकर सिंहानिया को उनकी देश एवं समाज की सेवा के लिए सम्मान किया गया। श्री सिंघानिया सम्मान स्वीकार करते हुए।

श्री हरिशंकर सिंघानिया सम्मेलन सदस्य विवरणिका का लोकार्पण करते हुए। प्रकाशक उपसमिति के चेयरमैन श्री प्रदीप ढोंढिया ने प्रथम प्रति प्राप्त की। साथ में परिलक्षित हैं श्री भानीराम सुरेका एवं श्री सूर्यकरण सारस्वा।

श्री हरिशंकर सिंहानिया को कुमारी अनुष्का सुरेका ने तिलक लगाकर, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने माल्यदान एवं श्रीफल प्रदान कर स्वागत किया। अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने राजस्थानी पगड़ी पहनाई एवं उपाध्यक्ष श्री शर्मा ने शाल ओढ़ा कर उनका सम्मान किया। महामंत्री श्री सुरेका ने मानपत्र का पठन किया जिसे भेंट किया मंत्री श्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा ने एवं उपसंयुक्त महामंत्री श्री पोद्दार ने उन्हें सम्मेलन साहित्य प्रदान किया।

इस अवसर पर समाज विकास के एक विशेषांक का जिसका सम्पादन उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने किया था उसका विमोचन नेपाल के कन्सुल जनरल डॉ. कुसुम ने किया।

सम्मेलन की एक बहुत सुन्दर एवं संग्रहणीय डायरेक्टरी का विमोचन इस अवसर पर श्री सिंहानिया ने किया एवं उन्होंने प्रथम प्रति डायरेक्टरी प्रकाशन उप समिति के संयोजक श्री प्रदीप ढोंढ़िया एवं उपसमिति के सदस्य श्री सूर्यकरण सारस्वा को प्रदान की।

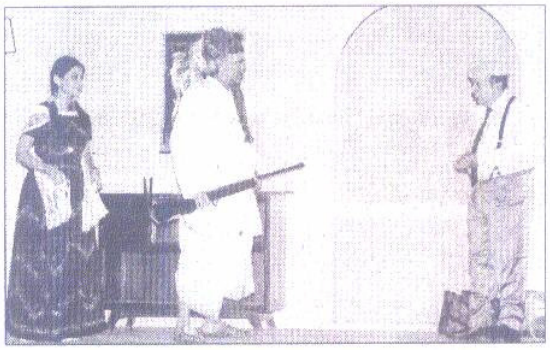

स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित हास्य-व्यंग्य हिन्दी नाटक 'क्या गोलमाल है' का एक दृश्य

उद्घाटन समारोह के उपरान्त विजय वर्मा द्वारा निर्देशित हास्य प्रधान नाटक 'क्या गोलमाल है' का मंचन किया गया जिसे दर्शकों ने बहुत सराहा।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री ओमप्रकाश अग्रवाल, रामगोपाल बागला, सुभाष मुरारका आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कलकत्ता हाईकोर्ट के तारीख ७ मई २००४ के निर्देश के अनुसार हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त अधिकारी की देख-रेख में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का चुनाव हुआ था। उसके विरुद्ध में श्री रामनिवास शर्मा द्वारा उपर्युक्त आर्डर को बदली करने के लिए हाईकोर्ट में जो अपील फाइल की गई थी उससे संबंधित आर्डर हाईकोर्ट ने दिया है, वह निम्नलिखित है जिसके अनुसार उपर्युक्त चुनाव पर प्रश्न-चिन्ह उठाया गया वह खारिज कर दिया गया है-

The election of Paschim Banga Pradeshik Marwari Sammelan.

When the application for variation which was filed by Om Prakash Joshi was heard, it was pointed out by the learned advocate appearing for Ram Niwas Sharma that he has not authorised Shri Joshi to file the said application, even though Shri Joshi had filed the said application as constituted attorney of Mr. Sharma. This fact was recorded by the Court in its order dated 5th October, 2004 and the Court gave liberty to the learned advocate appearing for Mr. Sharma to file an affidavit. Pursuant thereto an affidavit has been filed by Mr. Sharma. In paragraph-7 of the said affidavit it has been made clear that the said application for variation was filed by the constituted attorney on his own and that Shri Sharma had withdrawn the power of attorney granted in favour of Shri Joshi. This has been stated in paragraph-8. It has also been stated by Shri Sharma in paragraph-13 that Shri Sharma has no grievance about the election which was held by the Presiding Officer under the order of this Court. In that view of the matter we do not think that any further order need be passed on the application for variation. The application for variation is disposed of as above.

There will be no order as to costs.

sd/ A.K. Ganguly, J.

Tapan Kumar Dutt, J.

सिलीगुड़ी शाखा

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन सिलीगुड़ी शाखा एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के दशम वार्षिक उत्सव के समय जरूरतमंदों को कम्बल वितरण करने का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की श्री रामअवतार बरेलिया ने और इसका उद्घाटन श्री चन्दनमल चंगाईवाला ने किया। प्रधान अतिथि श्री बजरंग लाल मिताथलिया, मुख्य अतिथि श्रीमती सीता देवी नकीपुरिया, श्रीमती शशि बंसल आदि थे। पांच सौ से अधिक कम्बल वितरित किये गये। स्वागत भाषण श्रीमति स्नेहलता शर्मा ने दिया। इस आयोजन में स्थानीय कार्यकर्ताओं का काफी सहयोग रहा।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

रोहा : नि:शुल्क चिकित्सा एवं औषधि वितरण

१८-१२-२००५ रोहा शाखा एवं नौगांव ग्रेटर लायन्स क्लब की सहभागिता से रोहा निवासी स्व. पूनमचन्दजी कोठारी की पुण्य-स्मृति में एक नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग ३५० रोगियों की स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें मुफ्त दवा वितरित की गई। शिविर में लगभग १० विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपनी अमूल्य सेवा प्रदान कर अंचल की निर्धन जनता को लाभान्वित किया।

शिवसागर सम्मेलन द्वारा ७१वां स्थापना दिवस

तारीख २५ दिसम्बर को शिवसागर शाखा ने

सम्मेलन के स्थापना दिवस पर सबसे पहले भगवान मुक्तिनाथ, विष्णु, राम-जानकी आदि की पूजा की और दीन-दुखियों, ब्राह्मण, साधु-संतों के भोजन की व्यवस्था की गई। इसके उपरान्त आमसभा शाखा के सभापति श्री सत्यनारायण दाधिच की अध्यक्षता में की गई। शाखा मंत्री श्री विजय कुमार चित्तावत ने सम्मेलन परिवार को अधिक सुसंगठित करने की आवश्यकता बताई। और समाज के आत्म-सम्मान और गौरव को बरकरार रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। समाज सेवी श्री राधेश्याम चित्तावत ने समाज के बंधुओं से अधिक से अधिक संख्या में सम्मेलन की सदस्यता तथा आपसी प्रेम और भाईचारे को बढ़ाने पर जोर दिया। अध्यक्ष श्री सत्यनारायण दाधीच ने सम्मेलन के १९३५ से समाजोपयोगी किये गये अत्यधिक महत्वपूण कार्यों की व्याख्या की। आपने इस बात पर जोर दिया कि आज की राजनीतिक परिस्थिति में प्रादेशिक राजकीय सेवा के साथ-साथ चुनाव आदि में भी सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। तथा आने वाले चुनाव को ध्यान में रखते हुए हर व्यक्ति को अपना नाम मतदाता सूची को देखकर उसमें अंकित करवा लेना चाहिए। इस बैठक में पिछले वर्षों के आय-व्यय का हिसाब की सर्वसम्मति से पास किया गया।

जोरहाट शाखा के नये पदाधिकारियों का निर्वाचन

तारीख १५ जनवरी को सम्मेलन की जोरहाट शाखा के नया चुनाव अनुष्ठित हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया-

सर्वश्री मुरलीधर खेतान (अध्यक्ष), नरेन्द्र जैन व डॉ. शिवभगवान अगरवाल (उपाध्यक्ष), राजकुमार सेठी व दुलीचन्द अग्रवाल (संयुक्त सचिव) और किस्तुरमल अगरवाल (कोषाध्यक्ष)।

साधारण सभा की अध्यक्षता श्री बाबूलाल गगड़ ने की एवं निवर्तमान सचिव डॉ. शिवभगवान अगरवाला ने अपने समय के कार्यों की उपलब्धियां बताई तथा द्वादश अधिवेशन का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पास किया गया।

सम्मेलन के ७१वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में शाखा द्वारा गरीबों में कम्बल वितरित किया गया।

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना के वरिष्ठ संरक्षक श्री विजय कुमार बुधिया ने सूचना दी है कि अपनी १५ शाखाओं के साथ सन् १९४९ से समाज के मेधावी व जरूरतमंद छात्र/छात्राओं को ऋण छात्रवृत्ति प्रदान कर रही है। दिनांक २६-६-२००५ की कार्यकारिणी समिति की बैठक में छात्र/छात्राओं की मांग व आवश्यकताओं को मद्देनजर रखते हुए छात्रवृत्ति की राशि तत्काल प्रभाव से डेढ़ी व दुगुनी कर उनके मनोबल को शिक्षा के क्षेत्र में अधिकाधिक बढ़ाने का साहसिक व ऐतिहासिक कदम उठाया गया है जो कि एस कराहनीय प्रयास है।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि 'मिसाइल मैन' देश के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था- ''यह विज्ञान और तकनीक से सम्पन्न भारत का सपना है ऐसे भविष्य का सपना जो आज की वास्तविकता को पहचानता है। यह सराहनीय प्रयास हमारा रहे।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बाये से मुख्य अतिथि श्री सत्यनारायण जैन, श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल आदि तथा मुख्य वक्ता श्री राधेश्याम अग्रवाल, शाखा अध्यक्ष।

टिटिलागढ़

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ७१वां स्थापना दिवस समारोह उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन टिटिलागढ़ शाखा द्वारा मनाया गया। सर्वप्रथम सम्मेलन सभापति श्री मामराज जैन ने उपस्थित सभी अतिथिगण, मुख्य वक्ता, सम्मेलन सदस्यगण एवं पदाधिकारी, युवा मंच सदस्य एवं महिला समिति सदस्याओं का

हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। शाखा सचिव सोहनलाल गुप्ता ने भी उपस्थित समस्त भाई-बहनों का हार्दिक अभिनन्दन किया। उपस्थित मारवाड़ी युवा मंच अध्यक्ष रिंकू अग्रवाल एवं मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती ललिता लाठ ने ७१वें स्थापना दिवस पर बधाई देते हुए अपने सुविचार प्रकट किये। मंचासीन मुख्य वक्त श्री राधेश्याम अग्रवाल ने मारवाड़ी सम्मेलन तथा समाज पर ओजस्वी एवं सार्थक वक्तव्य दिया। विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सम्मेलन द्वारा आयोजित ७१वें स्थापना दिवस के अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच एवं महिला समिति की उपस्थिति से अपनी प्रसन्नता जाहिर की। मुख्य अतिथि श्री सत्यनारायण जैन ने प्रेरणादायक उद्‌बोधन में सबसे सामाजिक एकजुटता के लिए प्रयास करने का आह्‌वान किया। मंच का संचालन करते हुए सचिव श्री सोहनलाल गुप्ता ने सामाजिक बुराइयों को हटाने और भ्रष्टाचार को कम करने में जो सफलता प्राप्त की उसका वर्णन किया जिससे समाज आधुनिक युग की आवश्यकता की पूर्ति करने में समर्थ हुआ।

''मारवाड़ी समाज का राष्ट्र निर्माण में योगदान'' विषय पर हाई स्कूल स्तरीय निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सुश्री सुनिमा मंजरी बारीक, प्रथम-कुमारी कामा शिल्पा प्रधान द्वितीय, एवं कुमारी प्रतिभा मोनका चतुर्थ रही।

जूनागढ़ के चमेलीदेवी महाविद्यालय में एक महत्वपूर्ण शिविर का आयोजन

जूनागढ़ में चमेलीदेवी महाविद्यालय द्वारा एक माह के शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लघु उद्योग, सेवा संस्थान कटक द्वारा खाद्य पदार्थ बनाने एवं संरक्षण तथा रेडीमेड गारमेंट्स के क्षेत्र में ट्रेनिंग दी गई। भवानीपटना वोकेशनल कालेज के श्री अजय मिश्रा ने मुख्य अतिथि, गायत्री परिवार ट्रस्ट के श्री आर.एस. मित्तल तथा श्री एस.के. साहु ने मुख्य वक्ता के रूप में इसे सम्बन्धित किया। श्री माणिकचंद अग्रवाल ने सभा का सभापतित्व करते हुए कहा कि महाविद्यालय का उद्देश्य प्रारंभ से ही छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक क्षेत्र में भी स्वावलम्बन व स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ाना है। संयोजक श्री साहु ने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त इस संस्थान के अन्य छोटे यूनिट विकसित करने होंगे। इस आयोजन में ४० छात्राओं को मुख्य अतिथि द्वारा सर्टीफिकेट प्रदान किया गया। कालेज की प्रिंसिपल श्रीमती प्रियमंजरी पाण्डा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर : स्कूली छात्रों को स्वेटर दी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन शाखा कानपुर के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने बेसिक परिषदीय प्राथमिक विद्यालय, बिरहाना रोड में पढ़ रहे छात्रों को स्वेटर वितरित की। ज्ञातव्य है कि पूर्व में इस विद्यालय को संस्था द्वारा गोद लिया गया है। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष सर्वश्री सत्यनारायण सिंहानिया, शाखा महामंत्री अनिल परसरामपुरिया, कोषाध्यक्ष महेश भगत, तथा विश्वनाथ पारीक, भजनलाल शर्मा एवं कमलेश गर्ग उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन

विकलांग चेतना परिषद व प्रांतीय युवा मंच ने छह विकलांग जोड़ों को अटूट बंधन में बांधा

बिलासपुर : विकलांग चेतना परिषद व प्रांतीय युवा मंच द्वारा छह विकलांग जोड़ों का सामूहिक विवाह बिलासपुर के राघवेन्द्र राव सभा भवन में दिनांक ८ दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। समाज की मुख्यधारा से कटे रहने वाले विकलांग जोड़ों को समाज की मुख्य धारा से जुड़ने का यह समारोह साक्षी रहा।

इस अवसर पर आयोजित आशीर्वाद समारोह में विशिष्ट अतिथि वित्तमंत्री श्री अग्रवाल ने कहा कि विकलांगों का सामाजिक पुनर्वास कठिन किन्तु

महत्वपूर्ण कार्य है। विकलांगों का सामूहिक विवाह करवाकर विकलांग चेतना परिषद एवं युवा मंच ने सराहनीय प्रयास किया है। युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया ने आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि मारवाड़ी युवा मंच भी देश भर में ऐसे कार्यक्रमों हेतु आगे आएगा। आयोजन के विशिष्ट सहयोगी श्री मोतीलाल सुलतानिया ने कहा कि पवित्र आयोजनों में सहयोग करना धन का सात्विक एवं सही उपयोग है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

नगांव : पूर्वोत्तर प्रा.मां. युवा मंच द्वारा नि:शुल्क विकलांग शिविर (चिकित्सा)

नगांव शाखा : मंच की नवगठित मरीगांव शाखा के साथ संयुक्त रूप से एक नि:शुल्क विकलांग चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। विधायिका श्रीमती जुनजुनाली बरुआ ने शिविर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रादेशिक महामंत्री श्री बजरंगलाल नाहटा उपस्थित थे। मरीगांव शाखाध्यक्ष श्री ललित लड्ढा ने अध्यक्षता की। विशिष्ट अतिथि श्री नवलकिशोर मोर ने मंच द्वारा संपादित जनसेवा के कार्यक्रमों की जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि श्री नाहटा जी ने मंच की विभिन्न शाखाओं द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों की प्रशंसा की। मुख्य अतिथि श्रीमती बरुआ ने कहा शारीरिक रूप से अक्षम लोगों की विकलांगता दूर करने हेतु कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण एवं कृत्रिम उपकरण प्रदान कर प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। मंच के किसी भी कार्य में मेरा पूर्ण सहयोग रहेगा। शिविर में लगभग ३०० विकलांगों का पंजीकरण किया गया जिनमें ४९ लोगों को नि:शुल्क उपकरण प्रदान किये गये तथा शेष व्यक्तियों को उचित परामर्श व्यायाम एवं अस्त्रोपचार हेतु शिनाख्त किया गया।

ट्राईसाईकिल २०, ह्वील चेयर ७, बैशाखी ४, वाकिंग स्टीक ३ तथा श्रवण यंत्र १७ प्रदान किए गए। मरीगांव शाखा के सदस्यों ने अपना श्रमदान कर शिविर को सफल बनाया।

छापरमुख : नि:शुल्क विकलांग चिकित्सा शिविर

२५.९.०५ नगांव शाखा द्वारा मंच दर्शन के तहत नि:शुल्क विकलांग चिकित्सा शिविर का आयोजन छापरमुख में भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम कानपुर के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में राहा छापरमुख क्षेत्र के विधायक डा. आनन्द राम बरूवा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती प्रमिला कांदली, छापरमुख मे बयोवृद्ध समाजसेवी श्री बाबूलाल अग्रवाल, शाखा के वरिष्ठ सलाहकार श्री ज्योति प्रसाद खदड़िया उपस्थित थे। शाखाध्यक्ष श्री संजय मित्तल ने मंच द्वारा संपादित जनसेवा आदि कार्यों की जानकारी दी। सभा के दौरान लगभग ७०० लोग उपस्थित थे। शिविर में ३२४ शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को ट्राईसाईकिल ५४, ह्वील चेयर ८, वाकिंग स्टीक २५, एलबो स्टीक २, बैशाखी १०, श्रवण यंत्र ४० प्रदान किए गए। कार्यक्रम के आयोजन में स्थानीय प्रशासन एवं समाज के सभी वर्ग के लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ। शाखा के सदस्यों एवं विशेषकर महिला सदस्यों ने पूरे शिविर के दौरान अपना श्रमदान कर इसे सफल बनाया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

भुवनेश्वर में उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का सप्तम अधिवेशन

१७ दिसम्बर। सामाजिक कार्यों में सदैव तत्पर रहने वाली जूनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति ने भुवनेश्वर में आयोजित उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन के सप्तम अधिवेशन में हिस्सा लिया। आयोजन में उड़ीसा के वर्क्स हाउसिंग मंत्री श्री अनग उदय सिंह देव, केबिनेट मंत्री श्रीमती सुरमा पाठा, मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री सुरेन्द्र डालमिया, श्री वेदप्रकाश अग्रवाल, अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बापना, भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमति जया डोकानिया एवं श्रीमति प्रेमा पंसारी, भूतपूर्व प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती पार्वती मोदी एवं नवनिर्वाचित प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती सरला अग्रवाल गणमान्य अतिथियों के रूप में उपस्थित थी।

अधिवेशन में अध्यक्षा श्रीमती जामोदी देवी अग्रवाल, सचिव श्रीमती कोमल अग्रवाल सहसचिव श्रीमती चन्दा खेमका एवं सलाहकार श्रीमती आशा खेमका ने हिस्सा लिया। इस मौके पर सांस्कृति कार्यक्रम के दौरान जूनागढ़ समिति को स्वरोजगार की दिशा में अभूतपूर्व कार्य करने के लिए 'स्पेशल अवार्ड' से नवाजा गया। सबसे अधिक सम्पर्क एवं अच्छी रिपोर्टिंग के लिए समिति विशेष पुरस्कार से सम्मानित हुई एवं सामाजिक विकास की दिशा में कार्य करने हेतु भी शाखा को पुरस्कृत किया गया। अधिवेशन के अन्तर्गत खुला मंच कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ जिसमें 'वृद्धाश्रम कितना जरूरी' विषय पर सभी शाखाओं के प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इसमें जूनागढ़ सचिव ने भी सभा में अपने विचार रखे।

ज्ञातव्य है कि सन् २००४-०५ में शाखा ने नि:शुल्क चिकित्सा शिविर, 'प्याऊ', सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र ट्रेनिंग क्लासेज, अनाथ आश्रम को सहायता, शिशु विद्या मंदिर में सहयोग, विकलांग सहायता, नारी शिक्षा, आंखों के आपरेशन, गरीबों को भोजन, आदिवासी बच्चों का उत्थान आदि क्षेत्र में अच्छे कार्य किए हैं एवं समाज के प्रत्येक पर्व-त्योहार, जयंतियों का मिलित रूप से पालन किया है। आज समिति की कुल सदस्य संख्या ४० है इसे और बढ़ाने व समाज में संगठन लाने के लिए समिति दृढ़ संकलिप्त है।

अन्य संस्थाएं

''सामाजिक चेतना'' - मनीषिका एवं श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय का संयुक्त कार्यक्रम

सामाजिक चेतना एवं जागृति के लिए 'वीजन एवं संग्राम' अत्यंत आवश्यक है- ये उद्‌गार थे जस्टिस श्री श्यामल कुमार सेन के जो मनीषिका के रजत जयन्ती वर्ष के उद्‌घाटन करते समय बोल रहे थे। आपने कहा कि सही राह पर चलने के लिए निरंतर प्रयास और संग्राम आवश्यक है तथा नये समाज के गठन में व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो उनके संग्रामी तेवर से जनजागृति उत्पन्न होती है। समारोह के अध्यक्ष श्री गौरीशंकर कायां ने इस ओर बल दिया कि राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में सेवाभावी संस्थाओं के कार्यक्रम की आवश्यकता है एवं युवा पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए। साहित्यकार डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र ने कहा कि 'मनीषिका' के संस्थापक अध्यक्ष श्री पुष्करलाल केडिया से युवा पीढ़ी मार्ग-दर्शन एवं ऊर्जा प्राप्त कर सकती है।

श्री पुस्करलाल केडिया ने कहा कि सामाजिक उन्नयन में नारियों की महती भूमिका होती है। मां ही शिशु की प्रथम गुरु होती है और माता के संस्कार और शिक्षा से व्यक्तित्व के आधार का आरोहन हो सकता है।

कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सामाजिक प्रदूषण के खिलाफ जोरदार अभियान की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर १०७ व्यक्तियों की चयनित कविताओं की पुस्तक 'सामाजिक चेतना काव्य मंजूषा' का लोकार्पण किया गया जिसे श्री युगलकिशोर जैथलिया ने अतिथियों को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन कुमार सभा की साहित्य मंत्री कुमारी उषा द्विवेदी तथा धन्यवाद ज्ञापन मनीषिका के श्री राधेश्यामजी ने किया। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में सामाजिक चेतना संबंधी कविताओं के पाठ ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

कोलकाता : श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह २००५

२ अक्टूबर २००५। श्री अग्रसेन स्मृति भवन, कोलकाता द्वारा श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह को काफी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

श्री अग्रसेन शोभायात्रा में मनमोहक झांकी प्रस्तुत की गई तथा भवन के सदस्यों ने उत्साह से इसमें भाग लिया।

सायंकाल जयन्ती समारोह मनाने के लिए एक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता समाजसेवी मदनलाल पाटोदिया ने की। भवन के उपाध्यक्ष श्री परमानन्द चूड़ीवाल ने आगत सभाध्यक्ष, प्रधान वक्ता, प्रधान अतिथि, विशिष्ट वक्ता तथा सभी सभागत बन्धुओं का स्वागत करते हुए सभी को महाराज श्री अग्रसेनजी के सिद्धांतों को जीवन में अपनाकर उन पर चलने का आह्‌वान किया। भवन के मंत्री श्री श्यामलाल जालान ने भवन द्वारा चलाये जा रहे सेवाकार्य असहाय महिलाओं को आर्थिक अवदान, स्कूली बच्चों को शिक्षा के लिए सहायता, रोगियों को चिकित्सा सहायता, सर्वसाधारण के लिए पुस्तकालय, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, महिला शिल्प प्रशिक्षण आदि से सबको परिचित कराते हुए महाराज श्री अग्रसेनजी के जीवन पर प्रकाश डाला।

प्रधान अतिथि के पद से बोलते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने भवन के प्रति अपनी अस्था जताते हुए भवन के कार्यों की प्रशंसा की तथा संगठन पर जोर दिया। समाज में आई हुई कूरीतियों को श्री अग्रसेनजी के बताये हुए पथ पर चलकर दूर करने का आह्‌वान किया। प्रधान वक्ता उद्योगपति श्री ईश्वरी प्रसाद टांटिया ने हमेशा भवन के साथ जुड़े रहने का आश्वासन दिया। विशिष्ट वक्ता श्री विश्वम्भर नेवर ने समाज को संगठित होने का जोरदार आह्‌वान किया।

इस अवसर पर श्री दुर्गाप्रसाद नाथानी, श्री देवकुमार सराफ, डॉ. विनोद कुमार नेवटिया का सार्वजनिक अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। माध्यमिक परीक्षा में श्री सौरभ माधोपुरिया को ९५.६% तथा सुश्री नेहा मुरारका को ९३.४% अंक प्राप्त करने के लिए १-१ स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावे ९ छात्र एवं ९ छात्राओं के क्रमश: उच्चतर अंक प्राप्त करने के लिए रजत पदकों से सम्मानित किया गया।

वाणिज्य, कला एवं विज्ञान की उच्चमाध्यमिक परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए श्री गौरव अग्रवाल, श्री शशांक कानोड़िया एवं श्री राकेश अग्रवाल तथा छात्राओं में सुश्री नेहा चौधरी, सुश्री अवंतिका देवड़ा एवं सुश्री मेधा अग्रवाल, प्रत्येक को १-१ स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया।

भवन के उपमंत्री श्री सत्यनारायण फतेहपुरिया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री अग्रसेन जी की शोभायात्रा के सफल सुव्यवस्थित संचालन के लिए श्री प्रभुदयाल केशान को रजत मानपत्र देकर सम्मानित किया गया एवं श्री श्याम सुन्दर सोंगोनेरिया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

मध्य प्रदेश के अग्रवाल परिवारों को महासभा द्वारा गोल्डन कार्ड

भोपाल। मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा द्वारा परिवार परिचय कार्ड योजना का शुभारंभ जनवरी २००६ से प्रारम्भ किया जा चुका है, इस योजना के अंतर्गत महासभा प्रदेश में रहने वाले पांच लाख से अधिक अग्र परिवारों को तीन वर्ष के लिए मात्र ५०/- रुपये में गोल्डन कार्ड जारी करेगी। इस कार्ड में परिवार का पूर्ण विवरण, व्यवसाय का पता एवं फोन नं. रहेगा तथा यह कार्ड पारिवारिक, व्यापारिक और आवागमन के साथ ही परिवार की पहचान में सहायक होगा। महासभा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री डी.पी. गोयल और महामंत्री श्री सुरेश गोयल ने बताया कि इस गोल्डन कार्ड योजना से क्या-क्या लाभ होंगे।

सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) द्वारा दो हजार लोगों का चक्षु परीक्षण

२८ दिसम्बर। सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) ने नन्हेलाल मोहिनी देवी फाउण्डेशन के सहयोग से श्री एग्रो हिमघर लि., हरिपाल (हुगली) में नि:शुल्क चक्षु परीक्षण शिविर लगाया जिसमें लगभग १६५० लोगों का चक्षु परीक्षण किया गया। इससे से ५०० लोग चक्षु आपरेशन योग्य पाये गये। १००० लोगों को चश्मा दिया जाएगा तथा १०० लोगों को दवाइयां दी गई। ऑपरेशन योग्य लोगों को कोलकाता लाकर ऑपरेशन किया जाएगा। परिषद् अध्यक्ष श्री घनश्याम प्रसाद सोभासरिया तथा सचिव दामोदर प्रसाद विदावतका ने कहा कि परिषद् पश्चिम बंगाल के अलावा झारखण्ड, बिहार एवं राजस्थान के ग्रामीण व सुदुर इलाके में नि:शुल्क चक्षु परीक्षण शिविर गत कई वर्षों से लगा रही है। इस वर्ष १४०० लोगों के आंखों का ऑपरेशन एवं ५ हजार लोगों को चश्मा दिए गये। संस्था ने ग्रामीण इलाके में अधिक से अधिक शिविर लगाने का निर्णय लिया है।

फाउण्डेशन के ट्रस्टी श्री श्याम सुन्दर चौधरी के सहयोग से २१०० लोगों का चक्षु परीक्षण किया गया एवं सहयोगी श्री रामगोपाल बागला के सहयोग से एक साथ २१०० लोगों का चक्षु परीक्षण शिविरों का आयोजन कर रही है। सर्वश्री अनील पोद्दार, दीपक खोवाला, सुभाष अग्रवाल, आर.पी. भालोटिया, रवि लोहिया, काशी प्रसाद धोलिया, ओमप्रकाश विदावतका, ज्ञानचन्द पोद्दार, नवनीत सोढ़ानी, नरेन्द्र कुमार कावरा, सुशील कुमार अग्रवाल, प्रमोद कुमार अग्रवाल, सुरेश कुमार शर्मा भागचंद जैन, सुभाष जैन आदि शिविर को सफल बनाने में सक्रिय थे।

सम्मान / बधाई

श्री राजेन्द्र प्रसाद खेतान पूर्वी रेलवे के जोनल एडवाइजरी कमिटि, कलकत्ता के प्रतिनिधि के रूप में नेशनल रेलवे यूजर कन्सलटेटिव कमिटि के सदस्य निर्विरोध चुने गए हैं। श्री खेतान रानीगंज चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अवैतनिक सचिव भी हैं।

समाज विकास परिवार की ओर से इन्हें हार्दिक बधाई।

कुमारी खुसबू नाहटा को पंडित महेश चन्द्र गोस्वामी पुरस्कार देने की घोषणा

कुमारी खुसबू नाहटा ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत वर्ष २००५ की वाणिज्य स्नातक में नगाव जिले में सर्वोच्च ८२५ अंक प्राप्त कर स्नातक (वाणिज्य) की डिग्री हासिल की है। इनकी इस उपलब्धि पर राज्य सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को प्रोत्साहन हेतु कुमारी नाहटा को पंडित महेश चन्द्र गोस्वामी पुरस्कार देने की घोषणा की है। कुमारी नाहटा पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित महामंत्री श्री बजरंगलाल नाहटा की पौत्री तथा गुड्डी-प्रेम नाहटा की सुपौत्री है। समाज विकास परिवार की ओर से कुमारी खुशबू नाहटा के उज्वल भविष्य की शुभकामना है।

शोक सभा / श्रद्धांजलि

श्री बुधमल शामसुखा हमारे बीच नहीं रहे

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के विशिष्ट कार्यकर्ता श्री बुधमल शामसुख का दिनांक १० दिसम्बर २००५ को दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। कलकत्ता निवासी श्री शामसुखा ने लगभग ३० वर्ष पहले अपना स्थानांतरण दिल्ली में कर लिया था। उनके कलकत्ता प्रवास के समय सम्मेलन की मासिक पत्रिका 'समाज विकास' में उनके काफी रोचक लेख प्रकाशित होते थे। व २८-४-८५ को 'दिल्ली प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन' के अध्यक्ष चुने गए थे और उनके कार्यकाल में वहां का प्रादेशिक सम्मेलन पूर्णत: सक्रिय रहा। आवश्यकतानुसार सम्मेलन की विभिन्न गतिविधियों में उनका प्राय: सहयोग रहता था। सम्मेलन के प्रति उनका लगाव प्रशंसनीय था। उनके निधन से समाज को भारी क्षति हुई है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन स्व. बुधमल शामसुखा के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है एवं ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दु:ख को झेलने की शक्ति दें। ●●●

Wonder Images Pvt. Ltd.

we print on

FLEX

SAV

MESH

ONE-WAY VISION

FLOOR ETCHING

UK MEDIA

LAMINATION

CANVAS

Etc.

Contact :-

22155479

22155480

9830045754

9830051410

9830425990

9830768372

9830590130

9331854244

9231699624

154, LENIN SARANI,

KOLKATA-13

2nd Floor

REGISTERED Postal Registration No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06 SAMAJ VIKAS - JANUARY 2006 RNI Regd. No. 2868/68

MACO gel

Makesworth Industries Ltd.

"KAMALALAYA CENTRE"
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL)**, a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

Fully compatible with polyethylene of medium and high density.

No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.

Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,